



SATYA MicroCapital Ltd.

सर्वे भवन्तु सुखिनः



Inside SATYA



Your Quarterly Infotainment Magazine

Oct - Dec, 2022
Vol 04, Issue 01



SATYA

सर्वे भवन्तु सुखिनः



MISSION

“To be a preferred choice for the people at bottom of pyramid in creation of their enterprise & livelihood through holistic approach”

“सीमित सुविधा प्राप्त लोगों की आजीविका एवं उद्यम-विकास हेतु, बृहद दृष्टिकोण के साथ, एक प्राथमिक विकल्प होना”

MOTTO

“सर्वे भवन्तु सुखिनः”
“May all be Prosperous and Happy”

VISION

“To be a catalyst for the socio-economic upliftment of 5 million households by the year 2025”

“वर्ष 2025 तक 50 लाख परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए एक उत्प्रेरक होना”

विषय सूची

MD की कलम से	04
SATYA & Industry Snapshot	05
Workplace	06
How can you create a better workplace	07-08
Motivational column by Sandeep Kumar	09-10
SATYA SHAKTI FOUNDATION INITIATIVES	11-14
क्लाईट स्टोरी	15
पंचतंत्र की कहानियाँ	16-17
एक प्रेरक कहानी	18
ग्रेट प्लेस टू वर्क	19
किस्सागोई	20-21
ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त	22
बुल्ले शाह	23
दुनिया के आश्चर्यजनक तथ्य	24-25
Funkaar	26-28
सत्या संदेश	29
भारतीय इतिहास की वो 10 महान महिला शासक	30
शक्तियत	31
Top 50 Women Entrepreneurs in India	32
होली	33
विहंगम 2023 की कुछ झलकियाँ	34
विजयालक्ष्मी दास उध्यमिता पुरस्कार 2023	35-36
गर्मियों के लिए स्वास्थ्य संबंधी टिप्स	37
Time Management	38
Stress Management	39-40
EGRM	41
रेसिपी	42-43
Life @ Satya	44

MD की कलम से

सबसे पहले आप सभी को आने वाले वित्तीय वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। यह वित्तीय वर्ष हमारे लिए अत्यंत सफल रहा। हमने बहुत से कीर्तिमान स्थापित किए जिसमें हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि रही, 4000 करोड़ के लक्ष्य को पार करना, जो हमने 31 जनवरी 2023 को हासिल किया। इसी के साथ ही दुनिया की किसी भी माइक्रोफ़ाइनेंस कंपनी के लिए यह सबसे कम समय में हासिल किया गया लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में आप सभी सहयोगियों का योगदान रहा, जिसके लिए मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ और कंपनी के प्रति आपकी कर्तव्यनिष्ठा और जज़्बे को सलाम करता हूँ।

‘सत्या’ के साथ शुरू से ही यह बात बड़ी अच्छी रही है कि किसी भी मुश्किल वक़्त में वह विचलित नहीं हुयी अपितु नयी सोच के साथ, नए तरीकों को अपनाकर, अपने आपको पहले से बेहतर कर के उभरी है। ‘सत्या’ का सफर शुरुआत से ही आसान नहीं था। पिछले छह सालों में हमने बहुत से उतार-चढ़ाव देखे, पर हर मुश्किल को अपनी ताकत बनाकर उससे सीख ली और दुगुनी ताकत से आगे बढ़े। माइक्रोफ़ाइनेंस हमेशा से ही सोशल टचबेस पर आधारित रहा है। आने वाले समय में ग्राहक संपर्क के तरीकों में भी भारी बदलाव होने वाले हैं। सिर्फ डिजिटल कलेक्शन नहीं बल्कि अब तो डिजिटल मीटिंग पर ज़ोर दिया जा रहा है। आने वाले समय में हम माइक्रोफ़ाइनेंस का एक अलग स्वरूप देखने वाले हैं।

RBI ने NBFC-MFI के लिए दिये गए दिशा-निर्देशों में काफ़ी सकारात्मक बदलाव किए हैं, जो भविष्य में ग्राहक और कंपनी, दोनों के लिए ही हितकारी साबित होंगे। आने वाला वित्तीय वर्ष हमारे लिए एक नया शिखर तय करेगा और अपनी रफ़्तार में 5 गुना तेज़ी लाकर कंपनी के लक्ष्य को 2025 तक पूरा करने की ओर हम अग्रसर होंगे।

हमेशा की तरह इस बार भी ‘सत्या’ सबसे बेहतर बनकर सामने आएगी। ऐसा कहने का हौसला, ऐसा मानने का विश्वास मुझे इसलिए है क्योंकि मेरे पास दुनिया की सबसे बेहतरीन और कर्मठ टीम है। हम नंबर वन बन कर उभरेंगे क्योंकि इस टीम ने हर बार अपने आपको हर परिस्थिति के हिसाब से तेज़ी से ढाला है। बदलते परिवेश को तुरंत अपनाकर उस दिशा में चल देना, यह इस टीम की सबसे सकारात्मक बात है।

इस टीम को हमेशा जो लक्ष्य दिया गया, उसने वह लक्ष्य हासिल किया। यह वो टीम है जो मुझे प्रतिपल आगे बढ़ने, कुछ नया और बेहतर करने की प्रेरणा देती है। ऐसी अद्भुत टीम को देखकर, उनका जज़्बा देखकर, क्यों ना मन जोश से भर जाये, क्यों ना इस बात पर विश्वास हो कि हमारे लिए, इस जादुई टीम के लिए, कोई भी विपत्ति बड़ी नहीं, कोई भी लक्ष्य नामुमकिन नहीं। बस यही हौसला मन में लिए, अपने ‘सत्या परिवार’ को लेकर मैं निरंतर आगे बढ़ा चला जाता हूँ। आगे क्या होगा, मैं नहीं जानता। परिस्थितियां क्या और किस ओर करवट लेंगी, मुझे मालूम नहीं। बस इतना विश्वास है कि जो भी होगा, मैं और मेरी टीम हर चुनौती के लिए तैयार हैं।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्या ने अपना वार्षिकोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया। कोविड – 19 महामारी के चलते, इस वर्ष भी प्रतिबंधों की वजह से देशभर में कार्यरत कंपनी के सभी कर्मचारियों को एक साथ एक मंच पर लाने की अनुमति नहीं थी। इस वजह से कंपनी ने अलग अलग स्थानों पर प्रगति पथ का आयोजन किया। अंत में, हैड ऑफिस और स्टेट ऑफिस के कर्मचारियों के साथ विहंगम 2023 का आयोजन किया गया।

अगला लक्ष्य जो हमने तय किया है वो आसान नहीं, परंतु सत्या की टीम के लिए नामुमकिन कुछ भी नहीं, ये मेरा विश्वास है। इसलिए कोई भी लक्ष्य, कोई भी चुनौती, अब मुझे बड़ी नहीं लगती क्योंकि मुझे सबसे अद्भुत टीम का साथ, आशीर्वाद के रूप में ईश्वर से प्राप्त है।

तो आइए, चलते हैं वित्तीय वर्ष 2023-24 की यात्रा पर और इस वर्ष को 2022-23 की तरह सफल बनाते हैं।

ढेरों शुभकामनाएँ और शुभेक्षा सहित,

आपका

विवेक तिवारी



SATYA Snapshot

Parameters	Data as on 31 st December, 2022
Number of States	22
Number of Districts	267
Number of Branches	408
Number of Villages	41,341
No. of Clients	11,31,559
Number of Active Loans	11,32,715
Loan Outstanding	Rs. 3419 Cr.
Total no. of Staff	3932

Industry Snapshot

Indicator	Q3 FY 21-22	Q2 FY 22-23	Q3 FY 22-23	YOY change (%) Q3 FY 22-23 over Q3 FY 21-22
	31-Dec-22	30-Sep-22	31-Dec-22	
Branches	15,905	17,922	18,455	16.0%
Employees	1,34,884	1,49,766	1,57,737	16.9%
Clients (Cr.)	3.1	3.6	3.7	18.4%
Loan accounts	3.7	4.2	4.7	28.9%
Gross Loan Portfolio (Rs Cr)	85,246	1,05,274	1,14,969	34.9%
Balance sheet Portfolio (Rs Cr)	75,680	88,429	95,646	26.4%
Loans disbursed (during the quarter, LK)	61.7	75.3	79.1	28.3%
Loan amount disbursed (during the quarter, Rs Cr)	22,884	30,568	33,786	47.6%

Workplace



वर्कप्लेस फेसबुक द्वारा विकसित एक एंटरप्राइज कनेक्टिविटी प्लेटफॉर्म है जो ग्रुप, इंस्टेंट मैसेजिंग और न्यूज फीड जैसे टूल्स की मदद से एक संस्था के सभी कर्मचारियों को एक साथ जोड़े रखता है।

सत्या ने यह प्लैटफ़ॉर्म अपने कर्मचारियों को एक साथ जोड़े रखने के लिए ही लिया है। इसलिए आप सभी कर्मचारियों से विनती है कि वर्कप्लेस पर अकाउंट बनाकर, जानकारियाँ एक दूसरे के साथ साझा करने हेतु इसका अधिक से अधिक इस्तेमाल करें।

लॉगिन करने की प्रक्रिया:

जैसे ही कोई कर्मचारी कंपनी के साथ जुड़ता है, कंपनी द्वारा उसका एम्प्लोयी कोड जनरेट किया जाता है एवं उसे कंपनी एक CUG नंबर भी प्रदान करती है। नए कर्मचारी को अपना वर्कप्लेस अकाउंट एक्टिवेट करवाने हेतु, अपना CUG नंबर अपने एम्प्लोयी कोड के साथ स्टेट आईटी को भेजना होता है। स्टेट आईटी द्वारा हैड ऑफिस आईटी विभाग को यह अनुरोध भेजा जाता है जहां से एक एक्ससैस कोड जनरेट किया जाता है और वापस से स्टेट आईटी को भेजा जाता है जिसकी मदद से कर्मचारी पहली बार वर्कप्लेस पर लॉगिन कर अपना पासवर्ड सेट कर सकता है और मेम्बर बन सकता है। इसके पश्चांत वह किसी भी लैपटॉप या मोबाइल एप के जरिये पासवर्ड का प्रयोग कर अपना वर्कप्लेस अकाउंट एक्ससैस कर सकता है।

How can you create a better workplace?

Creating a better workspace often involves common sense, tact and empathy. Seeing your employees as humans instead of business tools is key. Your work environment impacts your mood, drive, mental health, and performance. If employees work in a dreary office setting with unfriendly workers, they likely won't have enough confidence or job satisfaction to speak up. That's why creating a positive work environment is critical to a company's success. In this writeup, we will explore ways to cultivate a better work environment that keeps employees happy and engaged.

Here are a few ways to improve your work environment, and employee engagement in turn.

1. Hire great team members – and don't be afraid to let ineffective ones go

Successful businesses know that a positive work environment starts with hiring employees who fit in with your culture. Ensure your employees are professional and team players. This also goes for people already in your team. Employees who work with other toxic employees are more likely to contaminate themselves, tumbling your company into an unhealthy work environment.

2. Play your part

When people talk about great places to work, they're often talking about great leadership. So, if you're in a leadership position, start by doing your job. Make sure you're moving people to act, mentoring them for growth, and guiding them towards success.

3. Check your attitude towards mistakes

Some companies are hard on failure and unforgiving of mistakes--but the best organizations reflect an understanding that perfection is unattainable, and failure can be a great teacher. They opt for messy over easy and learning over perfection. Knowing it's OK to take a risk and disclose an error without fear creates a culture that people find extremely inviting.

4. Have nothing to hide

The best workplaces are led with transparency. Where nothing is hidden, trust flourishes. When you speak with candor, you gain credibility and model responsibility and accountability, helping build great teams.

5. Groom new leaders

Make what you know accessible and help those around you begin to think of themselves as leaders. Guide them out of any fears and insecurities and help them discover what they're capable of. It's a wonderful feeling for everyone.

6. Improve the lighting in your workplace

Lighting plays a vital role in workers' performance and attitude. A 2021 report by researchers at Imperial College London reaffirmed longtime knowledge that exposure to natural light can improve mood, energy and mental health.

If it's not possible to incorporate natural lighting through windows, there are other options:

- Blue-enriched light bulbs - Blue-enriched light bulbs may reduce fatigue and increase happiness and work performance. Use this type of lighting in brainstorming rooms.
- Warmer-tone bulbs - In meeting or break rooms, use warmer tones to promote calmness and relaxation.
- Middle-tone bulbs - In conference rooms, use middle tones that welcome workers while keeping them alert.





7. Make the office comfortable

A clean, attractive office can have tremendous effects on the relationships between co-workers and managers. Even if the sun can't shine into your workplace, make an effort to provide a relaxing atmosphere with comfy furniture, working equipment, and a few extra-mile amenities.

For example, give your employees the flexibility to work where they're comfortable. You could fill the office with comfortable chairs and give them a choice of whether to sit or stand at their desks.

Make it easy for [workers] to purchase things like exercise balls and plants on the company dime. An organization must trust its employees to manage their own time. They should be free to take breaks to play games or just recharge as necessary.

When employees choose a space that makes them comfortable, give them the freedom to customize their area, as everyone works differently. This means getting rid of the "same-issued everything" and giving everyone a budget to customize their own setup.



8. Improve communication with employees

Be mindful of how you interact with employees. Team members and upper management should focus on their communication methods – including inclusive communication initiatives – and their effects on creating a positive work environment.

Employees are motivated and feel valued when they're given positive reinforcement and shown how their work contributes to the success of the business. This means developing employee performance plans and offering them specific feedback on how their work contributes to the organization's broader reach.

When you involve your staff in decision-making to create a better work environment, they feel valued. Don't be afraid to ask employees for their opinion on a new benefit offered or what they think of a new product launched.

9. Host company events to foster engagement

Hosting company-wide events can foster employee engagement. The more employees socialize, the more they build relationships with each other and their managers. Attending company events can help employees feel like they're a part of a work culture that values more than completing assignments on time. It can give them a sense of belonging along with opportunities to express their personalities.

The morale boost that often follows these engaging events can give employees more positivity to carry with them each day at work.

10. Express gratitude to your team

While you're working on communication, don't forget to show gratitude for your team's hard work. Effective employee recognition can transform and elevate an organization.

It ignites enthusiasm, increases innovation, builds trust, and drives bottom-line results. Even a simple 'thank you' after an employee goes above and beyond on a project, or puts in a series of late nights, goes a long way.

Conclusion

When people love their work and their workplace, when they trust each other, when they have pride not only in what they're doing but also in what everyone is doing together, you have a workplace that is productive, effective, efficient, successful, and irresistibly great. And it's something you can start building today.

Motivational column by Sandeep Kumar

The Sun's rays do not burn until brought to a focus

If you chase two rabbits, you will catch neither one. ~ Russian proverb

If you have heard of Archimedes of Syracuse, you will most likely know him as one of the greatest mathematicians ever known. Another string to Archimedes' bow was that he designed war machines using mathematic principles to bring about the destruction of the Roman army.

Archimedes was the ancient Greek mathematician who famously said, "Give me a lever and a place to stand and I will move the Earth."



SANDEEP KUMAR
AVP, TRAINING DEPARTMENT

Maybe what we don't know is that Archimedes led the defense of his city, Syracuse, against the attack of the Roman army. He invented a weapon, called the Archimedes Claw, that helped protect the city. But there are legends that he designed another weapon that raised fear in the hearts of the Romans: his Death Ray.

Archimedes' Death Ray worked by focusing the sun's rays using a series of mirrors. These polished, reflective mirrors were held by soldiers along the city's walls. Their target? The Roman ships. Evidently, the focus of the sun's rays could create such heat that the ships would burst into flames.

An alternative version of the Death Ray was that it was a single gigantic mirror that could incinerate anything in its path. Whatever the version, it seemed that Archimedes had invented the first laser gun in history.

Modern-day experiments have shown that mirrors and the sun could indeed be arranged to achieve this purpose. MIT employed a series of 127 mirrors that burnt up a recreation of a Roman ship. In 1973, an engineer incinerated a rowboat with a similar setup.

What happens when we stop trying to do so many things at once?

We'll see improvement in our job performance, personal relationships, and moods. Our productivity and creativity will increase. We'll restore our health and well-being. When we try to multi-task, we're not functioning at full capacity. Splitting our attention makes our brains work harder. It's exhausting to try to keep up such a pace.

Many of us grew up in the age of multi-tasking, where you couldn't call yourself productive if you weren't a good multi-tasker. We learned to always have several balls in the air at once — while writing something on the computer, we had a phone call going, we were writing something on a notepad or paper form, we were reviewing documents, sometimes even holding a meeting at the same time. That's the productive worker, the effective executive.

Imagine instead, a single-tasking life. Imagine waking up and going for a run, as if running were all you do. Nothing else is on your mind but the run, and you do it to the very best of your abilities. Then you eat, enjoying every flavorful bite of your fresh breakfast of whole, unprocessed foods. You read a novel, as if nothing else in the world existed. You do your work, one task at a time, each task done with full focus and dedication. You spend time with loved ones, as if nothing else existed.

This is summed up very well by something Charles Dickens once wrote, “He did each single thing as if he did nothing else.” This is a life lived fully in the moment, with a dedication to doing the best you can in anything you do — whether that's a work project or making green tea.

If you live your life this way, by this single principle, it will have tremendous effects.

Conclusion

Stay conscious of the present moment. Take a deep breath and move forward with your day. You'll discover doing one task at a time makes you more productive and creative. Relax and enjoy everything you do with simplicity and intentionality.

Be like a postage stamp—stick to one thing until you get there.~Josh Billings.

SATYA SHAKTI FOUNDATION INITIATIVES

October - December 2022
 Annual Blanket Distribution Drive:



Every year during the winter season, SATYA Shakti Foundation takes up the initiative to distribute the blankets to the people in need to counter harsh winter season when the temperature goes down and the mercury drops to very low in the thermometer. The best gift we could give to needy and destitute people is a warm blanket to cover themselves and keep them away from any illness due to the cold. Like every year, the blankets were distributed in the form of a drive across Delhi NCR. The drive was executed in association with SATYA MicroCapital Ltd. This activity facilitated relief to all needy people during this harsh winter. A glimpse of the blanket distribution drive is being shared. The details of the distribution drive is as mentioned below :

- Event was graced by the auspicious presence of Mr. Vivek Tiwari, MD, SATYA MicroCapital Ltd. and Ms. Shikha Sharma, Director & CEO, SATYA Shakti Foundation and team, along with SATYA MicroCapital Ltd. and team
- Provided 500 blankets to the needy homeless people, slum areas across Delhi NCR
- The blanket distribution drive was carried in different parts of Delhi NCR such as AIIMS Hospital, Safdarjung Hospital, Kalkaji Temple, Tekhand Village, Shadipur Metro Station, Jorbagh Metro Station, Moolchand Metro Station, JAIN Colony Uttam Nagar, DLF PRIME TOWER, Janakpuri, Vikaspuri, Jahangirpuri, Bhalaswa, Adarsh Nagar, Azadpur slums, Matiala Gaon, Okhla Bird Sanctuary Metro, Botanical Garden Metro station, Noida Sector 9, Noida Sector 21

SATYA Shakti Foundation had organized more than 70 free Health Camps starting from April'22 in 9 states. However, a total of 17 free Health Camps were hosted by Satya Shakti Foundation during the months of October and December 2022, in several villages of Uttar Pradesh (East) and Madhya Pradesh. Through these camps in states of Uttar Pradesh (East) and Madhya Pradesh, more than 2900 people availed free doctor's medical advice and medication in these 2 states. These camps were organized for the benefit of the people and to raise the health-seeking behavior among the people. Usually, people in rural parts of India either do not go for treatments or neglect treatments till the problem gets aggravated. Therefore, these health camps were conducted to raise awareness among the people to get themselves treated at the right time. SATYA Shakti Foundation expresses its sincere gratitude to all the participants, technical partners, and the Satya Microcapital team for making these camps a success.

October

2nd Foundation Day Celebration with Abandoned Sr. Citizens



The 2nd Foundation Day of SATYA Shakti Foundation was celebrated with the elderly deserted citizens living at Guru Vishram Ashram, SHEOWS, Badarpur, New Delhi. This was carried out to imbibe the valuable life lessons from our Senior citizens. Spending time with them was an ineffable ride with a great deal to study and inspire further. The tournament was graced with the benign presence of Mr. Vivek Tiwari, MD, SATYA MicroCapital Ltd and Ms. Shikha Sharma, Director & CEO, SATYA Shakti Foundation and group along with Ms. Aparna Dass, Executive Board Member, SHEOWS. All elderly residents were given a token of love and care in the form of a gratitude package which entailed shawls, sweets, fruits, and dry rations for residing senior citizens. Also, a Medical Syringe Pump was also donated for distinctive needs. Spending time with the elderly is one of the most cherished moments for those who want to talk with them because they love to share their feelings.

e-Clinic Summary for October – November – December 2022

In comparison to cities, people in rural areas are likely to be underserved when it comes to healthcare facilities due to inaccessibility, unaffordability and lack of awareness. To cater to this issue through an innovative solution model that leverages technology, SATYA Shakti Foundation has set up 11 e-Clinics in the rural areas of Himachal Pradesh (1 e-Clinic), Uttarakhand (4 e-Clinics) and Uttar Pradesh (6 e-Clinics) to cater the underserved community at the bottom of the pyramid in those locations by leveraging the technology at its best and using it for the service of mankind.

e-Clinics are providing access to affordable telemedicine services which has helped to mitigate the travel costs of the rural community to the clinics/hospitals in far off cities and has also helped to provide primary health services at their doorstep.

Almost 1693 people have availed the online doctor consultations and medication services at their doorstep during these 3 months which is the accumulated total for all the e-Clinics.

Below is the pictorial presence of our e-Clinics in the states of HP, UP East and Uttarakhand.





क्लाइंट स्टोरी

29 वर्षीय श्रीमती प्रीति कुमारी, उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के रसूलपुर गांव की रहने वाली हैं। वह अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती थी, ग्यारह साल का अभय और दस साल की वीरा, दोनों पास के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे।

उनके पति, श्री अजय कुमार, एक गैरेज में मोटरसाइकिल मैकेनिक के रूप में काम करते थे और लगभग 10000 रु प्रति माह कमा लेते थे। श्रीमती प्रीति कुमारी और उनके पति अपने बच्चों को उनकी पढ़ाई के लिए एक निजी स्कूल में भेजना चाहते थे क्योंकि उन्हें बचपन में कभी भी स्कूल में पढ़ने का अवसर नहीं मिला था।

श्रीमती प्रीति कुमारी अपने परिवार के भविष्य को लेकर चिंतित थीं। उन्हें अपने पति पर पूरा विश्वास था, लेकिन उसके पति श्री अजय कुमार वित्तीय संसाधनों के अभाव के कारण अपना काम शुरू नहीं कर सके और गैरेज में मैकेनिक के रूप में कार्य कर अपना जीवन यापन कर रहे थे।

श्रीमती प्रीति कुमारी और उनके पति ने मोटरसाइकिल मरम्मत गैरेज शुरू करने का फैसला किया, ताकि उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सके और जीवन में स्थिरता आ सके।



श्रीमती प्रीति को सत्या माइक्रो कैपिटल लिमिटेड के बारे में पता था, और उन्होंने समूह की सदस्य बन, मोटर साइकिल मरम्मत गैरेज शुरू करने और अपने पति का समर्थन करने के लिए सत्या से ऋण ले लिया। प्रीति और उनके पति अभी अपनी मोटरसाइकिल की मरम्मत गैरेज शुरू करने की प्रक्रिया में ही थे कि अचानक पूरी स्थिति बदल गई।

श्री अजय कुमार घर से अपने गैरेज तक आने-जाने के लिए बाइक का उपयोग करते थे। एक शाम, करीब साढ़े छह बजे काम से लौटते समय, श्री अजय कुमार का ट्रक से एक्सीडेंट हो गया। दुर्घटना तीव्र थी और मौक्रे पर ही उनकी मृत्यु हो गयी।

जब आपका कोई इस दुनिया से चला जाता है तो आप खुद को संभाल नहीं पाते। आपको लगता है कि आपकी दुनिया एक पल में बदल गई है। और आपने खुद को अंधेरे में खो दिया है। यही हाल प्रीति के साथ भी हुआ जब उन्हें अपने जीवन साथी की मौत की जानकारी हुई।

उसके सारे सपने चकनाचूर हो गए, और वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए चिंतित रहने लगीं। एक दिन सत्या के ईडीओ ने श्रीमती प्रीति के घर का दौरा किया और उन्हें हॉस्पिकैश बीमा के बारे में सूचित किया क्योंकि वह समूह ऋण की सदस्य थीं, और उन्हें रु. 1,00,000 दुर्घटना बीमा के रूप में मिल सकता था। क्योंकि श्रीमती प्रीति कुमारी और उनके पति का बीमा उनके व्यवसाय के लिए ऋण लेते समय किया गया था।

ग्राहक को समर्थन और मदद करने की दृष्टि से, लोन के साथ सत्या दैनिक नकद लाभ प्रदान करने के लिए हॉस्पिकैश पॉलिसी भी देता है। इस पॉलिसी के तहत उधारकर्ता या सह-उधारकर्ता के अस्पताल में भर्ती होने के मामले में अधिकतम 30 दिनों के लिए प्रति दिन 1000 रुपए और साथ ही दो साल की अवधि के लिए उधारकर्ता या सह-उधारकर्ता की आकस्मिक मृत्यु के मामले में 100,000 रुपये का लाभ मिलता है।

हॉस्पिकैश बीमा के बारे में जानने के बाद, श्रीमती प्रीति ने कहा, "मेरे लिए, मेरे बच्चे सब कुछ हैं, और सत्या ने मेरे सबसे विपरीत समय में मेरी मदद की है। मैं अपने जीवन में सत्या के योगदान को कभी नहीं भूल सकती।" दावा प्रक्रिया के बाद, उसे सत्या से मृत्यु के दावे के रूप में ₹1,00,000 दिए गए, और वह इन रुपयों का उपयोग अपने बच्चों के भविष्य के लिए कर रही हैं। उसने अपने गाँव में व्यवसाय शुरू करने के लिए नए ऋण लेने का भी फैसला किया क्योंकि वह अपने बच्चों को उच्च सरकारी अधिकारी बनाना चाहती है।

पंचतंत्र की कहानियाँ

दोस्तों, पंचतंत्र की कहानियाँ हम सभी ने बचपन में सुनी ही होंगी। अक्सर पंचतंत्र नाम के उच्चारण से हमें ऐसा प्रतीत होता है की हम किसी बड़े नीतिशास्त्र के बारे में चर्चा कर रहे हैं। वैसे देखा जाये तो पंचतंत्र का असली नाम 'नीति शास्त्र' ही है। पंचतंत्र कि मूल रचना संस्कृत भाषा में पंडित विष्णु शर्मा ने की थी।

संस्कृत की नीति कथाओं में पंचतंत्र का प्रथम स्थान है। पंचतंत्र की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह विश्व की 50 से भी अधिक अलग-अलग भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

पंचतंत्र को मुख्य रूप से 5 भागों में बांटा गया है:

1. मित्तभेद (मित्तों में मनमुटाव व अलगाव),
2. मित्तलाभ अथवा मित्तसंप्राप्ति (मित्त प्राप्ति और उसके लाभ),
3. काकोलुकीयम् (कौवे एवं उल्लुओं की कथा),
4. लब्धप्रणाश (हाथ लगी चीज (लब्ध) का हाथ से निकल जाना),
5. अपरीक्षित कारक (जिसको परखा नहीं गया हो उसे करने से पहले सावधान रहे; हड़बड़ी में कदम न उठाये)।

पंचतंत्र की कहानियों में पालों में मनुष्य के अलावा पशु-पक्षी भी हैं, उनके माध्यम से कई शिक्षाप्रद बातें बतलाई गयी हैं।

पंचतंत्र का इतिहास

पंचतंत्र का इतिहास बहुत ही रोचक है। लगभग 2000 साल पहले पूर्व दक्षिण के किसी जनपद में एक नगर था महिलारोप्य। वहाँ का राजा अमरशक्ति बड़ा ही पराक्रमी तथा उदार था। संपूर्ण कलाओं में पारंगत राजा अमरशक्ति के तीन पुत्र थे बहुशक्ति, उग्रशक्ति तथा अनंतशक्ति। राजा स्वयं जितना ही नीतिज्ञ, विद्वान्, गुणी और कलाओं में पारंगत था, दुर्भाग्य से उसके तीनों पुत्र उतने ही उद्वंड, अज्ञानी और दुर्विनीत थे।

राजा अमरशक्ति ने अपने लड़कों को व्यावहारिक शिक्षा देने का बहुत प्रयास किया लेकिन उन पर किसी बात का असर नहीं हुआ। थक-हारकर एक राजा ने अपने मंत्रीमंडल से कहा कि “मूर्ख और अविवेकी पुत्रों से अच्छा तो निस्संतान रहना होता। पुत्रों के मरण से भी इतनी पीड़ा नहीं होती, जितनी मूर्ख पुत्र से होती है। मर जाने पर तो पुत्र एक ही बार दुःख देता है, किंतु ऐसे पुत्र जीवन-भर अभिशाप की तरह पीड़ा तथा अपमान का कारण बनते हैं।”

अमरशक्ति राजा ने कहा कि हमारे राज्य में हजारों विद्वान्, कलाकार एवं नीतिविशारद महापंडित रहते हैं। कोई ऐसा उपाय करो कि ये निकम्मे राजपुत्र शिक्षित होकर विवेक और ज्ञान की ओर बढ़ें।

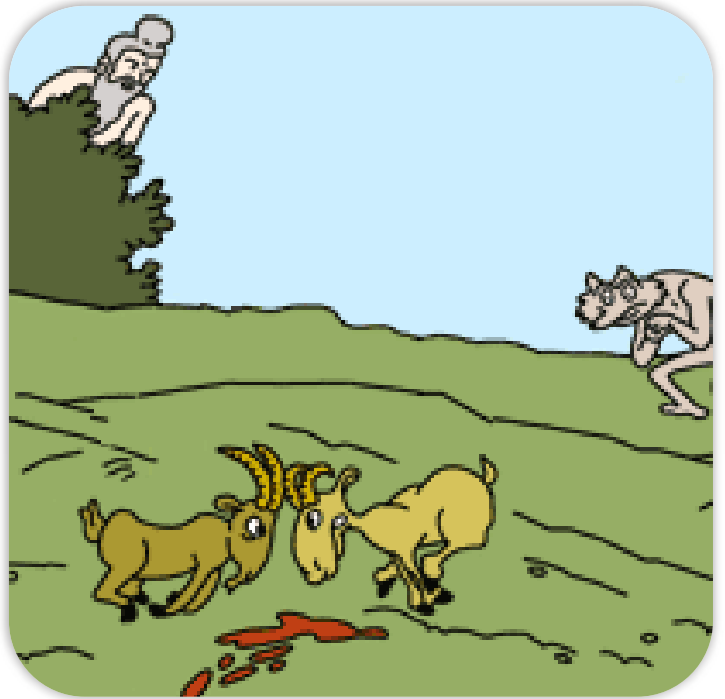
अत्यंत विचार-विमर्श के बाद एक मंत्री सुमति ने राजा को बताया कि महाराज, व्यक्ति का जीवन-काल तो बहुत ही अनिश्चित और छोटा होता है। हमारे राजपुत्र अब बड़े हो चुके हैं। विधिवत् व्याकरण एवं शब्दशास्त्र का अध्ययन आरंभ करेंगे तो बहुत दिन लग जाएंगे। इनके लिए तो यही उचित होगा कि इनको किसी संक्षिप्त शास्त्र के आधार पर शिक्षा दी जाए, जिसमें सार-सार ग्रहण करके निस्सार को छोड़ दिया गया हो; जैसे हंस दूध तो ग्रहण कर लेता है, पानी को छोड़ देता है।

ऐसे में यदि राजकुमारों को शिक्षा देने और व्यवहारिक रूप से प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व पंडित विष्णु शर्मा को सौंपा जाए जो कि हमारे ही राज्य में रहते हैं। उचित होगा सभी शास्त्रों में पारंगत विष्णु शर्मा की छात्रों में बड़ी प्रतिष्ठा है। आप राजपुत्रों को शिक्षा के लिए उनके हाथों ही सौंप दीजिए। वे अल्प समय में ही राजकुमारों को शिक्षित करने की समर्थ रखते हैं।

राजा अमरशक्ति अपने मंत्री के इस सुझाव से अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरंत महापंडित विष्णु शर्मा का आदर-सत्कार करने के बाद विनय के साथ अनुरोध किया, “आर्य, आप मेरे पुत्रों पर इतनी कृपा कीजिए कि इन्हें अर्थशास्त्र का ज्ञान हो जाए। मैं आपको दक्षिणा में सौ गाँव प्रदान करूँगा।”

पंडित विष्णु शर्मा ने कहा की “राजन मैं अपनी विद्या का विक्रय नहीं करता हूँ, मैं सौ गाँव के बदले में अपनी विद्या बेचूँगा नहीं। लेकिन मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं मात्र 6 माह में आपके पुत्रों को नीतियों में पारंगत कर दूँगा। यदि ऐसा न हुआ तो ईश्वर मुझे विद्या शुन्य कर दे।”

पंडित विष्णु शर्मा कि यह भीष्म प्रतिज्ञा सुनकर राजा अमरशक्ति स्तब्ध रह गये।





राजा अमरशक्ति ने मंलियों के साथ विष्णु शर्मा की पूजा-अभ्यर्थना की और तीनों राजपुत्रों को उनके हाथ सौंप दिया। पंडित विष्णु शर्मा तीनों राजकुमारों को अपने आश्रम ले आये। विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को अलग-अलग प्रकार की नीतिशास्त्र से संबंधित कहानियां सुनाई।

पंचतंत्र कहानियों के पात्रों में मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का वर्णन किया और अपने विचारों को उन पात्रों के मुख से व्यक्त किया। उनको पात्रों को आधार बनाकर पंडित विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को उचित-अनुचित और व्यावहारिक ज्ञान में प्रशिक्षित किया। राजकुमारों की शिक्षा पूरी होने के बाद विष्णु शर्मा ने उन कहानियों को पंचतंत्र कि कहानियों के रूप में संकलित किया।

वर्तमान में उपलब्ध प्रमाणों के आधार यह कहा जा सकता है कि पंचतंत्र ग्रंथ की रचना पूरी होने के दौरान पंडित विष्णु शर्मा की उम्र लगभग 80 वर्ष की रही होगी। वे दक्षिण भारत के महिलारोप्य नामक नगर में रहते थे।

पंडित विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कहानियों को बेहद रोचक तरीके से पेश किया है। यह कहानियां मनोविज्ञान, व्यावहारिकता तथा राजकार्य से सिधान्तों की सीख देती है। पंचतंत्र की कहानियां बहुत जीवंत हैं। इनमें लोकव्यवहार को बहुत सरल तरीके से समझाया गया है। बहुत से लोग इस कहानियों को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं।

इस कॉलम के माध्यम से हम हर संस्करण में आपके लिए पंचतंत्र की एक कहानी प्रकाशित करेंगे।

आज की कहानी का शीर्षक है: 'लड़ती भेड़ें और सियार' जो पंचतंत्र भाग - 1 'मिलभेद' से ली गयी है।

एक दिन एक सियार किसी गाँव से गुजर रहा था। उसने गाँव के बाजार के पास लोगों की एक भीड़ देखी। कौतूहलवश वह सियार भीड़ के पास यह देखने गया कि क्या हो रहा है। सियार ने वहाँ देखा कि दो बकरे आपस में लड़ाई कर रहे थे। दोनों ही बकरे काफी तगड़े थे इसलिए उनमें जबरदस्त लड़ाई हो रही थी। सभी लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे और तालियां बजा रहे थे। दोनों बकरे बुरी तरह से लहलुहान हो चुके थे और सड़क पर भी खून बह रहा था।

जब सियार ने इतना सारा ताजा खून देखा तो अपने आप को रोक नहीं पाया। वह तो बस उस ताजे खून का स्वाद लेना चाहता था और बकरोँ पर अपना हाथ साफ़ करना चाहता था। सियार ने आव देखा न ताव और बकरोँ पर टूट पड़ा। लेकिन दोनों बकरे बहुत ताकतवर थे। उन्होंने सियार की जमकर धुनाई कर दी जिससे सियार वहाँ पर डेर हो गया।

इस कहानी से सीख:

इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि लालच से प्रेरित होकर कोई भी अनावश्यक कदम नहीं उठाना चाहिए और कोई कदम उठाने से पहले भलीभांति सोच लेना चाहिए।

एक प्रेरक कहानी – कोशिश करना कभी मत छोड़ें

अंकुश के पिता कॉलेज में प्रोफेसर थे और वो चाहते थे कि अंकुश 12 वीं में अच्छे नंबर लेकर आई.आई.टी (IIT) का टेस्ट पास करे और टॉप का इंजीनियर बने। अंकुश भी असल में यही चाहता था और जब उसके 12 वीं में 96% नंबर आये तो वह और उसके पापा बहुत खुश हुए। उन्हें लगने लगा कि अब अंकुश IIT की परीक्षा भी पास कर लेगा और भारत के एक टॉप इंजीनियरिंग कॉलेज में उसे दाखिला मिल जाएगा।

अब अंकुश पूरे विश्वास और मेहनत से IIT के एंट्रेंस पेपर की तैयारी करने लगा। वो इतनी मेहनत कर रहा था कि अपनी भूख प्यास सब भूल गया। IIT के पेपर की तैयारी के लिए अंकुश अपने टीचर मनोज सर से कोचिंग ले रहा था। मनोज सर उन सभी बच्चों को कोचिंग देते थे जो IIT की परीक्षा पास करना चाहते थे। मनोज सर को भी लगता था कि अंकुश आसानी से आई.आई.टी की परीक्षा पास कर लेगा। उन्हें अंकुश का भविष्य बहुत उज्वल लगता था। उन्होंने भी अंकुश को बहुत मेहनत करवाई।

और फिर आखिरकार वो दिन आ गया जिसका इंतज़ार अंकुश, उसके पापा और मनोज सर को था। आई.आई.टी की परीक्षा थी और अंकुश बहुत खुश था। घर से मीठी दही खा कर अंकुश पेपर देने गया और घर आ कर भी वह बहुत खुश था क्योंकि उसका पेपर बहुत अच्छा हुआ था।

लेकिन कई बार किस्मत में वो नहीं होता जैसा हम सोचते हैं। जब आई.आई.टी का रिजल्ट आया तो उसमें अंकुश का नाम नहीं था। अंकुश मात्र 3 नंबरों से पीछे रह गया था जिसका दुःख सबको हुआ। अंकुश के पापा ने अंकुश का हौसला बांधते हुए उसे कहा कि कोई बात नहीं, इस बार नहीं हुआ तो अगली बार हो जाएगा। लेकिन अंकुश तो जैसे इस बात को दिल पर ले बैठा था। उसे पूरी उम्मीद थी कि वह पेपर पास कर लेगा और जब वह पास ना कर पाया तो बहुत निराश हो गया। अंकुश उदास रहने लगा और अब उसका मन अब पढाई में भी नहीं लगता था। अंकुश को निराश देख कर उसके पापा भी टेंशन में रहने लगे और इसलिए उन्होंने ये बात अंकुश के मनोज सर से साझा की। मनोज सर ने अंकुश को फोन किया और कहा “अंकुश... आज शाम को घर पर आना, कुछ बात करनी है”।

अंकुश सर की बात मान कर उनके घर उनसे मिलने गया। मनोज सर अंकुश को अपने घर के बगीचे में ले गए। वहां अंकुश को बैठने को कहा। अंकुश के पास ही थोड़ी सी रेत पड़ी थी। मनोज सर ने अंकुश को कहा “अंकुश.. वो रेत देख रहे हो न, उसे उठाओ और अपनी मुट्ठी में बंद कर लो”।

अंकुश ने रेत उठाई पर जैसे ही मुट्ठी बंद की, रेत उसके हाथों से फिसल गई। अंकुश ने 3-4 बार कोशिश की लेकिन हर बार वो रेत उसके हाथ से फिसल जाती।

मनोज सर ने अंकुश को समझाया “अंकुश ज़िन्दगी में कुछ चीज़ें इस रेत की तरह होती हैं, उन्हें कितना भी थामने की कोशिश करो, वो हमारे हाथ से फिसल ही जाती हैं। तुमने पूरी कोशिश की आई.आई.टी का पेपर पास करने की लेकिन ये ज़रूरी नहीं कि तुम वो पास कर ही लो, तुम सिर्फ कोशिश कर सकते हो।”

“ये हमारा कर्तव्य है कि हम किसी चीज़ को पाने के लिए पूरी कोशिश करें लेकिन अगर वो चीज़ हमें ना मिले तो इसका मतलब ये नहीं कि ज़िन्दगी से हार कर बैठ जाओ। उठो और मेहनत करो और पूरे जोश के साथ अगली बार कोशिश करो, निश्चित ही तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य मिल जाएगा। सिर्फ एक बार आई.आई.टी का टेस्ट पास न होने से हार मान लेना, ये तो कायरता है और अंकुश तुम कायर नहीं हो। अब निराशा छोड़ो, घर जाओ और मेहनत करो, मुझे यकीन है तुम ये कर सकते हो”।

मनोज सर से मिली सीख का अंकुश पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा और अगली बार उसने फिर कोशिश की और उसने आई.आई.टी की परीक्षा पास कर ली। दोस्तों, ये कहानी के जरिये हम सिर्फ ये बताना चाहते हैं कि माल कुछ असफलताओं की वजह से हमें कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए, हमेशा कोशिश करते रहे। एक ना एक दिन सफलता मिल ही जाती है। बस खुद पर यकीन रखें।



ग्रेट प्लेस टू वर्क



This is to certify that SATYA MICROCAPITAL LTD. has successfully completed the assessment conducted by Great Place to Work® Institute, India, and is certified as a great workplace.

This certificate is valid from Sep 2022 to Sep 2023.



Yeshasvini Ramaswamy
Chief Executive Officer
Great Place to Work® Institute, India

Note: The certificate is valid subject to the terms and conditions agreed to by the Organization.



किस्सागोर्ड

अकबर-बीरबल की कहानी: सबसे बड़ा मनहूस कौन ?

एक बार की बात है, बादशाह अकबर बिस्तर से ही अपने सेवकों को पानी लाने का आदेश दे रहे थे। उसी समय बादशाह के कमरे के पास से कूड़ा साफ करने वाला सेवक गुजर रहा था। उसने जब देखा कि अकबर को प्यास लगी है, लेकिन उनके आसपास कोई सेवक नहीं है, तो वो खुद ही बादशाह के लिए पानी ले गया। उस कूड़ा उठाने वाले सेवक को पानी लिए अपने कमरे में खड़ा देखकर अकबर चौंक गए, लेकिन उन्हें प्यास बहुत लगी



थी। ऐसे में बिना ज्यादा सोचे-समझे अकबर ने उसका लाया हुआ गिलास पकड़ा और पानी पी लिया।

उसी वक्त अकबर के कुछ खास दरबारी उनके कमरे में पहुंचे। उन्होंने कूड़ा उठाने वाले सेवक को वहां देखते ही उसे कमरे से तुरंत बाहर जाने के लिए कहा। फिर उन्होंने कुछ देर बादशाह से बात की और वो भी उनके कमरे से चले गए। तभी कुछ देर बाद बादशाह अकबर का पेट खराब होने लगा। जैसे-जैसे दिन ढलता गया, उनकी तबीयत और बिगड़ती चली गई।

बादशाह की ऐसी हालत देखकर बड़े-से-बड़ा हकीम बुलवाया गया, लेकिन दवाई लेने के बाद भी उनकी तबीयत में कोई सुधार नजर नहीं आ रहा था। तभी राज वैद्य ने बादशाह को ज्योतिष बुलवाने का सुझाव देते हुए कहा- “बादशाह! लगता है आप पर मनहूस इंसान का साया पड़ गया है।” राज वैद्य की बात का मान रखते हुए अकबर ने ज्योतिष को बुलाने का आदेश दिया।

तभी अकबर के मन में हुआ किसी मनहूस की परछाई तो मुझ पर नहीं पड़ गयी? अकबर ने कुछ देर सोचा तो याद आया कि कूड़ा साफ करने वाले का लाया हुआ पानी मैंने पिया था। यह सोचते ही उन्होंने उस कचरा साफ करने वाले कर्मचारी को सजाए मौत सुना दी। बादशाह का आदेश मिलते ही सिपाहियों ने उस सेवक को जेल में डाल दिया।

कुछ देर बाद बादशाह के इस आदेश के बारे में बीरबल को पता चला। वो तुरंत उस सेवक के पास पहुंचे और कहा कि तुम चिंता मत करना, मैं किसी-न-किसी तरीके से तुम्हें बचा ही लूंगा। इतना कहकर बीरबल तुरंत बादशाह अकबर के पास पहुंच गए।

बीरबल ने बादशाह से पूछा, “आपको क्या हुआ है? कैसे इतना बीमार पड़ गए?”

जवाब में अकबर बोले, “बीरबल एक मनहूस इंसान की छाया मुझपर पड़ गई और मैं बीमार हो गया।”

बादशाह का जवाब सुनते ही बीरबल उन्हीं के सामने हंसने लगे। यह देखकर अकबर को बहुत खराब लगा। उन्होंने कहा, “बीरबल तुम मेरी बीमारी का मजाक उड़ा रहा हो।”



बीरबल ने कहा, “नहीं-नहीं बादशाह, मुझे तो बस इतना कहना है कि अगर मैं आपके सामने उस कूड़ा उठाने वाले सेवक से भी बड़ा मनहूस इंसान ले आऊं तो क्या आप उस सेवक की सजा माफ कर दोगे ?

अकबर ने पूछा, “उससे भी बड़ा मनहूस कोई हो सकता है क्या ? चलो, तुम किसी बड़े मनहूस को ले आते हो, तो मैं उस व्यक्ति को मुक्त कर दूंगा।”

तभी तपाक से बीरबल बोल पड़े कि महाराज, उससे बड़े मनहूस आप स्वयं ही हैं। उस मामूली सेवक ने तो बस आपकी प्यास बुझाने के लिए आपको पानी दिया, लेकिन आपको लग रहा है कि उसके कारण आपकी तबीयत खराब हो गई है। उस बेचारे नौकर का तो सोचिए जरा, वो तो आपको पानी पिलाने की वजह से जेल में पहुंच गया। सुबह-सुबह आपको देखने की वजह से उसका दिन तो छोड़िए पूरा जीवन बर्बाद हो गया। अब कुछ देर में उसे मौत की सजा मिल जाएगी। अब आप ही बताइए तबीयत खराब होना बड़ी मनहूसियत है या मौत की सजा मिलना ?

आगे बीरबल बोले, “अब आप खुद को मौत की सजा मत देना, क्योंकि आप हम सभी के बादशाह हैं और हमें जान से भी ज्यादा प्यारे हैं।”

बीरबल की ऐसी बुद्धिमता वाली बातें सुनकर बीमार अकबर जोर से हंस पड़े। उन्होंने तुरंत ही सिपाहियों को कूड़ा-कचरा उठाने वाले उस सेवक को जेल से रिहा करने का आदेश दिया। साथ-ही-साथ उसकी मौत की सजा भी माफ कर दी।

कहानी से सीख :

किसी की भी बातों पर आकर फैसला नहीं लेना चाहिए और अंधविश्वास बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।

ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त

ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त क्या है और क्यों ज़रूरी है ?

ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त उस देखभाल के मानक को स्पष्ट करते हैं जो ग्राहकों को वित्तीय सेवा प्रदाताओं के साथ व्यापार करते समय प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। ग्राहक सुरक्षा के सात सिद्धान्त होते हैं और एक जिम्मेदार वित्तीय सेवा प्रदाता को ग्राहकों को वित्तीय सेवा प्रदान करते वक़्त इन सातों सिद्धान्तों का नैतिकता से पालन करना चाहिए ताकि व्यवसाय को प्रभावी बनाया जा सके और ऐसा करते वक़्त किसी भी स्टेज पर ग्राहकों के हित का हनन न हो। यह सात सिद्धान्त इस प्रकार हैं:



1. उपयुक्त उत्पाद डिज़ाइन और वितरण - सत्या उत्पादों और वितरण चैनलों को डिज़ाइन करने के लिए पर्याप्त देखभाल करता है जिससे हमारे ग्राहकों को कोई नुकसान नहीं पहुंचे। उत्पादों और वितरण चैनलों को ग्राहक विशेषताओं के साथ डिज़ाइन किया जाता है।
2. अधिक कर्जभार से रोकथाम - सत्या क्रेडिट प्रक्रिया के सभी चरणों में पर्याप्त जांच करता है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि ग्राहकों के पास ऋणग्रस्त होने के बिना चुकाने की क्षमता है।
3. पारदर्शिता - सत्या स्थानीय भाषा में स्पष्ट, पर्याप्त और सामयिक जानकारी का संचार करता है जिसे ग्राहक समझ सकते हैं ताकि ग्राहक सही निर्णय ले सकें।
4. जिम्मेदार मूल्य निर्धारण - मूल्य, नियम, और शर्तें इस तरह से सेट की जाती हैं कि ग्राहकों के लिए सस्ती हो और कंपनी को भी इससे कोई हानि न पहुंचे।
5. ग्राहक के साथ उचित और सम्मानजनक व्यवहार - सत्या ग्राहकों के साथ उचित और सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है। हम भेदभाव नहीं करते। सत्या भ्रष्टाचार और अपमानजनक उपचार का पता लगाने और उसे ठीक करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करता है।
6. ग्राहक डाटा की गोपनीयता - व्यक्तिगत ग्राहक डेटा की गोपनीयता का सम्मान स्थानीय कानूनों और नियमों के अनुसार किया जाता है और इसका उपयोग केवल उन उद्देश्यों के लिए किया जाता है जिस उद्देश्य से ये जानकारियाँ एकत्र की गई थीं और वह भी ग्राहक की सहमति के साथ।
7. ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र - सत्या के पास ग्राहकों की शिकायतों और समस्या समाधान के लिए समयबद्ध और उत्तरदायी तंत्र हैं और समस्याओं को हल करने एवं उत्पादों और सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए उनका उपयोग किया जाता है।

सत्या जैसी जिम्मेदार संस्था के कर्मचारी होने के नाते हमारा यह फर्ज़ है कि हम सभी इन ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्तों का सख्ती से पालन करें तभी हम एक मजबूत एवं सतत कंपनी की नींव रख पाएंगे।

बुल्ले शाह : चढ़दे सूरज ढलदे देखे, बुझदे दीवे बलदे देखे

चढ़दे सूरज ढलदे देखे, बुझदे दीवे बलदे देखे,
हीरे दा कोइ मुल ना जाणे, खोटे सिक्के चलदे देखे ।

जिना दा न जग ते कोई, ओ वी पुत्तर पलदे देखे,
उसदी रहमत दे नाल बंदे, पाणी उत्ते चलदे देखे ।

लोकी कैदे ढाल नइ गलदी, मै ते पत्थर गलदे देखे,
जिन्हा ने कदर ना कीती रब दी, हथ खाली ओ मलदे देखे ।

कई पैरां तो नंगे फिरदे, सिर ते लभदे छावां,
मैनु दाता सब कुछ दित्ता, क्यों ना शुकर मनावां ।

फकीर बुल्ले शाह से जब किसी ने पूछा कि आप इतनी गरीबी में भी भगवान का शुक्रिया कैसे करते हैं तो बुल्ले शाह ने जवाब में ये पंक्तियाँ सुनाई थी, जो आज उनकी काफियों में दर्ज है।
बुल्ले शाह के इस काफ़ी में जीवन के सकारात्मक पक्ष का पुट छुपा है तो भक्ति का रहस्य भी शामिल है।
जीवन तो नकारात्मकता और सकारात्मकता का चक्र है, ये चक्र घूमता रहा है, घूमता रहेगा। जरूरत है कि हम इस बात हेतु प्रयासरत रहें कि हम अपने साथ परोपकार करने वाले के लिए शुक्रिया करने का संकल्प अपने अन्दर पूर्ण धैर्य के साथ कितना खुद में समाहित किये हुए हैं।

जब जीवन में नकारात्मक पक्ष आता है तो अमूमन मनुष्य विचलित हो जाता है। ये विचलन धर्म के प्रति आस्था-विश्वास-श्रद्धा को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करने लगता है। जो धैर्यशील मनुष्य होते हैं, वो पूर्ण धैर्यता के साथ अपने काम में पूरे मनोयोग से लगे रहते हैं, विचलित नहीं होते, सफलता और लक्ष्य के प्रति कर्मशील बने रहते हैं। जीवन का नकारात्मक पक्ष जब गुजर जाता है तो इन्हें अपने उन्हीं कर्मों का परिणाम सकारात्मकता के रूप में प्राप्त होता है, जो उन्होंने नकारात्मकता के स्थिति में पूर्ण सकारात्मकता के साथ पूर्ण किया था।

नकारात्मक दौर में इन्सान केवल विचलित ही नहीं होता, कर्म के प्रति उदासीन भी हो जाता है। यह भूल जाता है कि सूर्य अगर अस्त होता है तो फिर से सूर्यास्त भी होता है। दीपक अगर बुझता है तो प्रज्वलित भी किया जा सकता है। कभी कभार तो वक्त की कुछ कमियों के बावजूद भी इन्सान सफल होता हुआ दिखता है। जीवन में कई बार ऐसा भी होता है कि हीरे का भी मोल नहीं रह जाता और खोटा सिक्का चल पड़ता है। बुल्ले शाह इसे परवरदिगार की रहमत मानते हैं और उसे स्वीकार करते हैं। समय चक्र से ज्यादा उलझते नहीं, अपने कर्म को जारी रखते हैं और समय चक्र के नकारात्मक पक्ष के गुजर जाने का इन्तजार करते हैं। उसके बाद जीवन को फिर से सकारात्मकता के साथ जीने का प्रयास शुरू करते हैं।

सुख और दुःख, जीवन के दो पहलु हैं। ये मामला कुछ वैसा ही है जैसे जीवन और मृत्यु। जीवन है तो मृत्यु सुनिश्चित है। इसी तरह आज सुख है तो दुःख भी सुनिश्चित है, आज दुःख है तो आने वाले समय में सुख भी सुनिश्चित है। इन्तजार कीजिये, धैर्य बनाए रखिये और नकारात्मक समय में भी सकारात्मकता के साथ अपने कर्म में लगे रहिये तो आने वाले समय में परिणाम भी सकारात्मक ही होंगे। परवरदिगार के प्रति पूर्ण आस्था, श्रद्धा और विश्वास जरूरी है।

जिन लोगों ने आपके साथ परोपकार किया है, वो लौकिक हो या परलौकिक हो, उसके प्रति अपनी आस्था-श्रद्धा-विश्वास बनाए रखिये क्योंकि कल के दुखों में जिसने आपका साथ दिया, आप पर रहमत बरसाई थी, वो आने वाले कल में भी आपके दुखों में आपका साथ देगा, ये विश्वास ही मनोबल है। ये विश्वास और मनोबल ही आपके अन्दर सकारात्मक ऊर्जा का संचरण कर आपको प्रतिकूल परिस्थितियों में कर्मशील बनाए रखता है और कर्म का परिणाम आपको आने वाले कल में सकारात्मकता के साथ प्राप्त होता है, स्थितियों को अनुकूल करने में सहायक साबित होता है। मेरे समझ से यही जीवन का दर्शन भी है, यही जीवन भी है, यही जीवन का औचित्य भी है और यही जीवन का आनंद भी है। जीवन ही धर्म है, धर्म ही जीवन है। बस दोनों को अलग-अलग रखे बिना, एक दुसरे में समाहित कर लीजिये तो यही भक्ति भी है और यही भक्ति का मार्ग भी है।

बुल्ले शाह के इस काफ़िये “चढ़दे सूरज ढलदे देखे, बुझदे दीवे बलदे देखे” को अपने जीवन के संघर्ष के दौरान मूल मन्त्र की तरह कायम रखिये तो संघर्ष आसान होता हुआ दिखेगा। मन में ये विश्वास जागेगा कि आज जो आपके जीवन में सफलता का सूरज ढलता हुआ दिख रहा है, वो आने वाले समय में, आपके निरंतर प्रयास के बाद बुझे हुए दीपक को भी जलाने की क्षमता का संचरण करेगा। बस आस्था-श्रद्धा-विश्वास बनाए रखिये, अपने दाता के प्रति, अपने आत्मविश्वास के प्रति, अपने मेहनत और प्रयास के प्रति सफलता सुनिश्चित मिलेगी।





दुनिया के आश्चर्यजनक तथ्य

जानिए कुछ ऐसे आश्चर्यजनक तथ्य, जिनके बारे में आपने पहले कभी नहीं सुना होगा। आज इस लेख के माध्यम से हम आपको बताने जा रहे हैं, कुछ ऐसे रोचक तथ्य जो देश और दुनिया से जुड़े हुए हैं।

1. दुनिया की पहली हॉस्पिटल ट्रेन भारत के पास है। जिसका नाम लाइफ लाइन ट्रेन है।
2. एक सामाजिक अध्ययन के अनुसार, संसार की महिलाये करीब 18 ट्रिलियन डॉलर कमाती हैं। लेकिन उनके खर्चे करीब 28 ट्रिलियन डॉलर होते हैं।
3. क्या आप जानते हैं कि सऊदी अरब देश में एक भी नदी नहीं है।
4. क्या आप जानते हैं कि हीरे की खोज सबसे पहले भारत में ही की गयी थी।
5. क्या आप जानते हैं कि शैम्पू की खोज सबसे पहले भारत में ही हुई थी।
6. प्लास्टिक सर्जरी का आविष्कार भारत में ही हुआ था।
7. क्या आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे पुराना झंडा डेनमार्क देश का है जो 13वीं सदी में लगाया गया था।
8. अफ्रीका के गर्म इलाकों में एक पेड़ पाया जाता है जिसका नाम "समानी समन" है। इस पेड़ की खासियत यह है कि यह पेड़ दिन के समय अपनी फलियों में पानी भर लेता है। फिर यही पानी वर्षा के रूप में धरती पर गिरता है। वहां के लोगों के लिए पानी का एक मात्र स्रोत होता है। वहां के लोग इस पेड़ को वर्षा वाला पेड़ भी कहते हैं।
9. अमेरिका के मिनेसोटा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बिना हाथ से छुए किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखने की विधि की खोज कर ली है। इस विधि में अल्ट्रासाउंड वेव्स की मदद से वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक रखा जाता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि भौतिक विज्ञान के मेटामैटेरियल के सिद्धांतों की सहायता से वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाया जा सकता है।
10. क्या आप जानते हैं साल 1880 में थाईलैंड की रानी डूब रही थी लेकिन उसे बचाने उसके नौकर भी नहीं आये थे। क्योंकि थाईलैंड की रानी को छूना मना था।
11. क्या आप जानते हैं भारत के मिजोरम में रहने वाले जियोना चाना नामक व्यक्ति के परिवार में कुल 180 से भी अधिक लोग रहते हैं। जिओना इस परिवार के मुखिया हैं। उनकी 39 पत्नियां हैं जिनसे 90 से भी अधिक बच्चे हैं और उन बच्चों के भी बच्चे हैं। इस प्रकार यह परिवार दुनिया का सबसे बड़ा परिवार माना जाता है। यह परिवार कुल 100 कमरों के घर में रहता है। चुनाव के समय इस परिवार को काफी महत्व दिया जाता है। माना जाता है कि इस परिवार के द्वारा जिस भी पार्टी को वोट दिया जाता है उस पार्टी का जीतना लगभग संभव हो जाता है।
12. भारत के रांची (झारखंड) में तैमारा घाटी में जाते ही एक अजीब समस्या का सामना करना पड़ता है। यहां पहुंचते ही आपके स्मार्टफोन या मोबाइल का समय और साल अपने आप ही बदल जाता है। यहां के लोगों का मानना है कि वे सभी अंतर्राष्ट्रीय समय से एक साल आगे के समय और साल में जीवन व्यतीत करते हैं। जबकि भारत के अन्य शहरों में समय अंतर्राष्ट्रीय समय और साल के अनुसार ही रहता है। हैं न कितनी अजीब बात।
13. क्या आपको पता है कि ताजमहल कुतुबमीनार से 2 फुट ज्यादा ऊंचा है। कुतुबमीनार की ऊंचाई 238 फीट जबकि ताजमहल की ऊंचाई 240 फीट है।
14. ब्राजील के एक 100 वर्षीय वृद्ध वाल्टर आर्थमन ने एक ही कंपनी रेनॉक्स व्यू में 84 साल तक काम करके विश्व रिकॉर्ड बना दिया है।
15. हिमांचल प्रदेश में स्थित ममलेश्वर शिवलिंग भगवान शिव और माता पार्वती जी का मंदिर है। इस मंदिर की एक खास बात है कि यहां एक गेहू का दाना रखा हुआ है जो 200 ग्राम वजन का है। कहा जाता है कि यह गेहू का दाना 5000 साल पुराना महाभारत काल का है। जब पांडव अज्ञातवास में रह रहे थे तो वे यहां आए थे और उनके पास से यह दाना छूट गया था।
16. क्षेत्रफल के अनुसार रूस विश्व का सबसे बड़ा देश है। इस देश के एक हिस्से में दिन तो एक हिस्से में रात होती है।
17. इंडोनेशिया में चलने वाली विमान सेवा को गरुड़ एयरलाइन्स कहते हैं। यह नाम भगवान विष्णु जी के वाहन गरुड़ देव के नाम पर रखा गया है।
18. नेपाल के रहने वाले 16 साल के देशान्त अधिकारी के पीठ के निचले हिस्से पर पूंछ है। जन्म से लेकर अब तक यह पूंछ 70 सेंटीमीटर की हो गयी है। पुरोहित बताते हैं कि देशान्त हनुमान जी का अवतार रूप है और उनके माता पिता को यह पूंछ न काटने को कहा है।
19. क्या आप जानते हैं कि भारत की सबसे महंगी ट्रेन महाराजा एक्सप्रेस है। इसका सबसे सस्ता टिकट 1,93,490 रुपए का है। और सबसे महंगा टिकट 15,75,830 रुपये का है।
20. क्या आप जानते हैं कि अगर महासागरों का पानी थोड़ा सा भी बढ़ गया तो सबसे पहले मालदीव देश डूब जाएगा। क्योंकि यह देश समुद्रतल से केवल 6 फीट ही ऊंचा है।
21. वर्ष 2022 में महाशिवरात्रि के दिन उज्जैन के महाकाल मंदिर में सबसे ज्यादा दिए जलाने का गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया। दावा है कि यहां 21 लाख दिए जलाए गए।
22. ऑस्ट्रेलिया के एक रेस्टोरेट में अगर आप फोन का इस्तेमाल नहीं करते हैं तो आपको 10 प्रतिशत का डिस्काउंट दिया जाता है।
23. दुनिया की सबसे लंबी सोने की चैन को दुबई में बनाया गया है। यह चैन साढ़े पांच किलोमीटर लंबी है। इसका वजन 256 किलोग्राम है। इस 22 कैरेट सोने की चैन को 100 कारीगरों ने 45 दिनों में बनाया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में इसे हाथ से बनी हुई दुनिया की सबसे लंबी सोने की चैन के रूप में दर्ज किया गया है।



Funkaar



Emp Id - A574
Name - Bishnu Roul
Jagatsinghpur
Odisha



Funkaar

POWER OF CONSCIOUS AND SUB-CONSCIOUS MIND

Subconscious mind has immense power to get that work done which cannot be done by human with natural abilities.

Conscious Mind: Conscious mind is that part of our mind which is responsible for our thinking and act while we are in the awoken state. For example, talking, executing our tasks, whatever we do when we are active.

Subconscious Mind: Subconscious mind remains in dormant state when we are getting help from conscious mind. Your subconscious mind also works simultaneously when you are working consciously but the difference is....You are not noticing the job being done by subconscious mind. Your subconscious mind is like a huge memory bank. Its capacity is virtually unlimited. It permanently stores everything that ever happens to you. The function of your subconscious mind is to store and retrieve data. Its job is to ensure that you respond exactly the way you are programmed. Your subconscious mind makes everything you say and do fit a pattern consistent with your self-concept, your "master program."

Uncommon facts about Subconscious Mind: For example, you are breathing right now (of course all the time) but you are not paying attention on this act, because your act of breathing is being governed by subconscious mind. But when I reminded you about your breathing, your little bit of attention went on this act. Now if I say take long breath..... And as you are doing so, your act of breathing is now being controlled by conscious mind.

One example will clear the difference: When you were at your early age and learning how to ride bicycle, your sole attention was on learning the tactics of riding. Controlling the handlebar, facing straight, and moving the pedal were some of the activities you were doing with the help of your conscious mind. After few days / few weeks of learning you might have excelled in riding a bicycle such that you could leave the handle for little bit of time and still bicycle remains in your control, you might have thought of something else, and the bicycle still be controlled by you. Could you think this earlier when you were just started the learning process???

So, why this happens?

Because, once we have trained our conscious mind for any work, the repetition of that activity sends the signals / skills / knowledge etc to the subconscious mind.

Your subconscious mind is a powerful force to be reckoned with. It makes up around 95% of your brain power and handles everything your body needs to function properly, from eating and breathing to digesting and making memories.



Akash Tiwari
Emp Code: 18583
Dy. Manager
Accounts



It's very strange when you think about. The subconscious mind isn't creative, it doesn't understand jokes, and it can remember everything you have ever done, said, or witnessed. The remaining 5% of your brain, the conscious mind, as the sole purpose of interacting with the physical world.

However, by taking control of your subconscious mind, by becoming aware and in sync with it, you can be sure to take back control of your life and basically achieve anything you want to. This is because when your subconscious mind and your conscious mind is working together to achieve a common goal, you can believe that it will happen.

All over conclusion that in life we need to have self determination to achieve our desired goals with effort of our internal will power in our mind set to receive the output in reality also with positive environmental set of minds.

सत्या संदेश

SATYA संदेश यूट्यूब चैनल, माननीय MD sir की एक बड़ी सोच है, एक विस्तृत योजना है, जिसके माध्यम से कम्पनी एवं कम्पनी के बाहर के लोगों को विभिन्न विषयों के बारे में जागरूक किया जाता रहे।

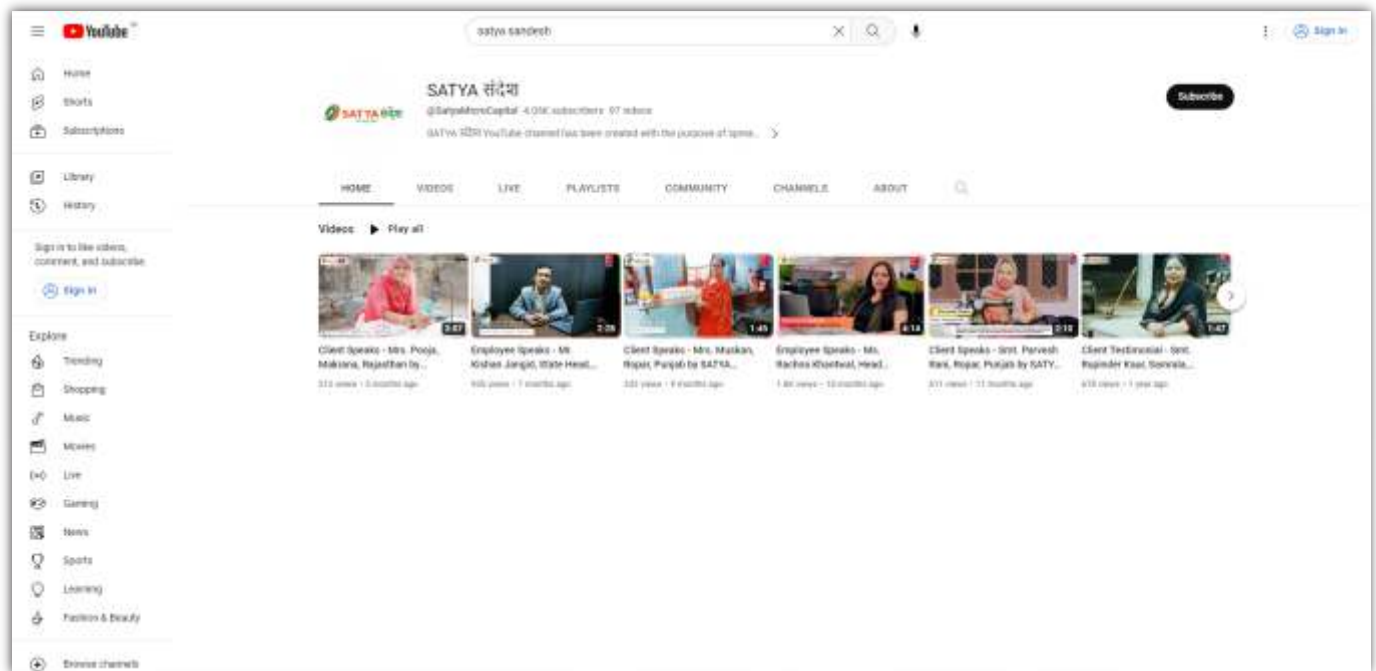
अभी तक इस योजना के तहत स्वास्थ्य संबंधित जानकारीयां एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारीयां प्रस्तुत की जाती रही हैं। आने वाले समय में, इस चैनल के माध्यम से सुरक्षा एवं स्वरोजगार संबंधित जानकारीयां भी प्रस्तुत की जाएंगी। अपने क्लाइंट्स की सफलता की कहानियां भी प्रस्तुत की जाएंगी।

चूंकि सोच बड़ी है और उद्देश्य जनहित से जुड़ा है, तो ज्यादा से ज्यादा लोगों के द्वारा इस चैनल के माध्यम से प्रस्तुत किये जाने वाले जानकारीयों को स्वयं भी देखना चाहिए और अन्य लोगों को भी देखने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि इस चैनल का उद्देश्य पूरा हो सके।



**इस चैनल को Subscribe करें, वीडियो को ज्यादा से ज्यादा लोगों को Share करें,
अगर वीडियो पसंद आये तो Like कर के उत्साहवर्धन करें।**

<https://www.youtube.com/channel/UCzXuJ7okWLWOSK70vKdppkw>

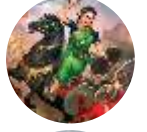
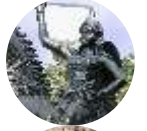


भारतीय इतिहास की वो 10 महान महिला शासक, जो अपनी निडरता और साहस के लिए थीं मशहूर

भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक योद्धा हुए हैं। महाराणा प्रताप से लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज तक न जाने कितने शासकों ने मुगलों व अंग्रेजों के अत्याचार से भारत की रक्षा की थी। लेकिन केवल पुरुष शासक ही नहीं, महिला शासकों ने भी अपने साहस और जज़्बे से इस देश की रक्षा की थी। भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई से लेकर रानी चन्नम्मा तक, ऐसी कई योद्धा रही हैं जिन्होंने देश की खातिर अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे।

आज हम आपको देश की ऐसी ही 10 महिला शासकों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो अपने शौर्य और साहस के लिए मशहूर थीं-

- 1. प्रभावती गुप्त :** प्रभावती गुप्त को भारतीय इतिहास की पहली महिला शासिका के नाम से भी जाना जाता है। प्रभावती ने चौथी शताब्दी के दौरान शासन किया था। वो सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थीं। प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से हुआ था, लेकिन कम उम्र में ही रुद्रसेन की मृत्यु के बाद प्रभावती ने वाकाटक की संरक्षिका बनकर शासन किया।
- 2. रानी दिद्दा :** रानी दिद्दा कश्मीर की पहली महिला शासिका हुआ करती थीं, जिन्होंने 10वीं शताब्दी के करीब कश्मीर में शासन किया था। वो काबुल के शाही परिवार से ताल्लुक रखती थीं। रानी दिद्दा 'लोहार वंश' की राजकुमारी और 'उत्पल वंश' की शासिका (रानी) थीं। उन्हें 'वीर रानी' के नाम से भी जाना जाता है।
- 3. रुद्रमा देवी :** रुद्रमा देवी 13वीं शताब्दी में 'काकतीय वंश' की महिला शासिका थीं। रुद्रमा देवी की सबसे खास बात ये थी कि उन्होंने अपने शासनकाल में समाज के निचले तबके के लोगों को अपनी सेना में भर्ती किया और उन्हें सम्मान दिया। रुद्रमा देवी ने पूर्वी गंग व यादव राजाओं से युद्ध लड़ा था और विजय प्राप्त की थी।
- 4. रजिया सुल्ताना :** रजिया सुल्ताना तुर्क इतिहास की पहली महिला शासिका थीं। वो मुगल सम्राट इल्तुतमिश की बेटी थीं। इल्तुतमिश की मौत के बाद रजिया को राजगद्दी सौंपी गई क्योंकि वो ज़्यादा काबिल थीं। रजिया ने 1236 ई० से 1240 ई० तक 'दिल्ली सल्तनत' पर शासन किया था। रजिया सुल्ताना दरबार में पुरुषों की भांति जाती थीं।
- 5. रानी दुर्गावती :** रानी दुर्गावती 'कालिंजर' के चंदेल राजाओं की बेटी व गोंडवाना के आदिवासी राज्य की रानी थी। विवाह के कुछ ही साल में पति की मृत्यु के बाद रानी ने स्वयं शासन की बागडोर सम्भाली। इस दौरान मालवा के मुस्लिम राजा बाजबहादुर ने गोंडवाना पर कई हमले किये लेकिन हर बार उन्हें रानी दुर्गावती के हाथों पराजित होना पड़ा। इसके बाद रानी ने मुगल सम्राट अकबर से भी युद्ध लड़ा था।
- 6. अहिल्याबाई होल्कर :** अहिल्याबाई होल्कर 'मराठा साम्राज्य' की प्रसिद्ध महारानी और मराठा सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खण्डेराव की धर्मपत्नी थीं। वो केवल 19 वर्ष की आयु के विधवा हो गयी थीं। अहिल्याबाई के नेतृत्व में 'होल्कर वंश' ने अंग्रेजों के आगे झुकने से साफ इंकार कर दिया था। अहिल्याबाई ने काशीविश्वनाथ, सोमनाथ, महाकाल और अन्य शिवमंदिर का पुनः निर्माण कराया था। इंदौर में आज भी अहिल्याबाई होल्कर को 'मां अहिल्या' के नाम से जाना जाता है।
- 7. रानी लक्ष्मीबाई :** रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित 'झांसी की रानी' और '1857 की क्रान्ति' की द्वितीय शहीद वीरांगना थीं। रानी लक्ष्मीबाई ने केवल 29 वर्ष की आयु में अंग्रेजों के खिलाफ आज़ादी का बिगुल बजाया था। लेकिन देश की आज़ादी की खातिर रणभूमि में वो वीरगति को प्राप्त हो गयीं। हिंदुस्तान आज भी रानी लक्ष्मीबाई को 'खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झांसी वाली रानी थी' के तौर पर जानती है।
- 8. रानी चन्नम्मा :** रानी चन्नम्मा मैसूर के किन्नूर राज्य की रानी थीं। इन्होंने अंग्रेजों की 'राज्य हड़प नीति' के विरोध में सशक्त विद्रोह किया था। रानी चन्नम्मा पति की मृत्यु के बाद बेटे की मृत्यु का गम भूल पाती उससे पहले उन्हें अंग्रेजों से युद्ध लड़ना पड़ा। इस दौरान रानी ने अंग्रेजों का जमकर मुकाबला किया, लेकिन बाद में अंग्रेजों द्वारा उन्हें बंदी बना लिया गया और जेल में ही उनकी मृत्यु हुई।
- 9. बेगम हजरत महल :** बेगम हजरत महल अवध (लखनऊ) के नवाब वाजिदअली शाह की पत्नी थीं। इनके माता-पिता ने इन्हें एक तवायफ़खाने में बेच दिया था। जब नवाब वाजिदअली ने हजरत महल को देखा तो उनकी खूबसूरती देख उनसे शादी कर बेगम बना लिया। जब अंग्रेजों ने 'अवध' को हथियाने का प्रयास किया तो नवाब ने हथियार दाल दिए, लेकिन बेगम हजरत महल ने अपने लोगों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया था।
- 10. रानी अवंतीबाई :** रामगढ़ की रानी अवंतीबाई '1857 की क्रान्ति' के दौरान रेवांचल में 'मुक्ति आंदोलन' की मुख्य सूत्रधार थीं। इनका विवाह बचपन में ही मनकेहणी राजकुमार विक्रमाजीत सिंह के साथ हो गया था। राजा विक्रमाजीत सिंह पूजा-पाठ व धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते थे। इसलिए राज्य संचालन का काम पत्नी रानी अवंतीबाई ही करती रहीं। रानी अवंतीबाई ने अपने राज्य को बचाने के लिए अंग्रेजों से जंग लड़ी थी।





शक्सियत

फौलाद के बने नेता, सरदार वल्लभभाई पटेल

हर साल 15 दिसंबर को भारत के पहले गृहमंत्री (Home Minister), उप-प्रधानमंत्री (Deputy Prime Minister) सरदार वल्लभ भाई पटेल (Sardar Vallabhbhai Patel) की पुण्यतिथि (Death Anniversary) मनाई जाती है। उनको भारत का लौह पुरुष (Iron man) कहा जाता है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को याद करने के बहुत से कारण हैं लेकिन उनमें सबसे प्रमुख है, आज़ाद भारत को एकजुट करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका।

भारत के Iron Man

1. सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात में हुआ। लंदन जाकर उन्होंने बैरिस्टर (Barister) की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।
2. स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार पटेल का पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेड़ा सत्याग्रह (Kheda Satyagrah) में था। उन्होंने 1928 में हुए बारदोली सत्याग्रह (Bardoli Satyagrah) में किसान आंदोलन का सफल नेतृत्व किया।
3. सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के पहले गृहमंत्री और उप-प्रधानमंत्री थे।
4. आज़ादी के बाद देसी रियासतों का एकीकरण कर अखंड भारत के निर्माण में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलय करवा कर भारतीय एकता का निर्माण किया है।
5. महात्मा गांधी ने सरदार को लौह पुरुष की उपाधि दी थी।
6. गुजरात में नर्मदा के सरदार सरोवर डैम (Sardar Sarovar Dam) के सामने सरदार वल्लभ भाई पटेल की 182 मीटर (597 फीट) ऊंची लौह प्रतिमा (Statue of Unity) का निर्माण किया गया है। ये दुनिया का सबसे बड़ा स्टेचू है। इसको 31 अक्टूबर 2018 को देश के लिए खोल दिया गया था।
7. यह सरदार पटेल का ही विज़न था कि भारतीय प्रशासनिक सेवाएं (Indian Civil Services) देश को एक रखने में अहम भूमिका निभाएंगी। उन्होंने सिविल सर्विसेज को देश का स्टील फ्रेम (Steel Frame) कहा था।
8. बारदोली सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभ भाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की थी।
9. किसी भी देश का आधार उसकी एकता और अखंडता में निहित होता है और सरदार पटेल देश की एकता के सूत्रधार थे। इसी वजह से उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस (National Unity Day) के तौर पर मनाया जाता है।
10. सरदार पटेल जी का निधन 15 दिसंबर, 1950 को मुंबई में हुआ था। 1991 में सरदार पटेल को मरणोपरांत 'भारत रत्न' (Bharat Ratna) से सम्मानित किया गया था।



Top 50 Women Entrepreneurs in India making a difference (2023)

These entrepreneurs have successfully founded their own Startups in India and changed the lives of thousands of people around them.

They have succeeded to create their own businesses from scratch, despite all odds and failures, by sheer determination and untiring work ethic.

Here is a list of top women entrepreneurs in India with their education, prior work experiences and achievements:

1. Chitra Gurnani Daga (Thrillophilia.com)
2. Upasana Taku (MobiKwik)
3. Aditi Gupta (Menstrupedia)
4. Divya Gokulnath (Byju's)
5. Suchi Mukherjee (Limeroad)
6. Falguni Nayar (Nykaa)
7. Radhika Ghai Aggarwal (Shopclues)
8. Richa Kar (Zivame)
9. Vandana Luthra (VLCC Group)
10. Kiran Mazumdar Shaw (Biocon Limited)
11. Neha Behani (Moojic)
12. Supriya Paul (Josh Talks)
13. Vineeta Singh (Sugar Cosmetics)
14. Ghazal Alagh (Mamaearth)
15. Anisha Singh (Mydala.com/ She Capital)
16. Ashwini Asokan (Mad Street Den/ Vue.ai)
17. Neeru Sharma (Infibeam Avenues)
18. Gurleen Kaur Tikku (Hareepatti)
19. Pranshu Patni (Hello English)
20. Sairee Chahal (Sheroes)
21. Sabina Chopra (Yatra Online)
22. Shradha Sharma (YourStory Media)
23. Niharika Jhunjunwala (Sugarbox)
24. Kanika Tekriwal (JetSetGo)
25. Pooja Dhingra (Le15 Patisserie)
26. Ravina Raj Kohli (Star News/ JobCorp)
27. Vani Kola (Kalaari Capital)
28. Swati Bhargava (CashKaro.com)
29. Sakshi Tulsian (POSist)
30. Udit Pal (Salt)
31. Smita Ram (Rang De)
32. Basudha Shrivastava (ExpressEarth Digital Services)
33. Florida Tilton (Biozone Research Technologies)
34. Farah Nathani-Menzies (The Mumum Co.)
35. Shreya Lamba (The Mumum Co.)
36. Khushboo Jain (Impact Guru)
37. Isha Choudhry (ZoloStays)
38. Sneha Choudhry (ZoloStays)
39. Malini Agarwal (MissMalini Entertainment)
40. Mehak Sagar (Wed Me Good)
41. Naiyya Saggi (BabyChakra, Good Glamm Group)
42. Sanna Vohra (The Wedding Brigade)
43. Shivani Poddar (FabAlley & Indya)
44. Tanvi Malik (FabAlley & Indya)
45. Shubhra Chadda (Chumbak Design Pvt. Ltd.)
46. Suchita Salwan (Little Black Book)
47. Neha Motwani (Fitternity)
48. Malika Datt Sadani (The Moms Co.)
49. Sugandha Agarwal (Docttocare)
50. Ruchi Garg (Venuelook)



होली

होली के पर्व से अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रह्लाद की। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के अहंकार में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था। प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रतीक रूप से यह भी माना जाता है कि प्रह्लाद का अर्थ आनन्द होता है। वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्या माइक्रोकैपिटल में होली का पर्व धूम धाम से मनाया गया। इसकी कुछ झलकियाँ आप यहाँ देख सकते हैं।



विहंगम 2023 की कुछ झलकियाँ

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्या ने अपना वार्षिकोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया। कोविड – 19 महामारी के चलते, इस वर्ष भी प्रतिबंधों की वजह से देशभर में कार्यरत कंपनी के सभी कर्मचारियों को एक साथ एक मंच पर लाने की अनुमति नहीं थी। इस वजह से कंपनी ने अलग अलग स्थानों पर प्रगति पथ का आयोजन किया। अंत में, हैड ऑफिस और स्टेड ऑफिस के कर्मचारियों के साथ फरवरी 26 – 27, 2023 को दिल्ली स्थित पूलमैन होटल में विहंगम 2023 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों के अच्छे काम को 'रिवार्ड एवं रीकग्नीशन' के माध्यम से सराहा गया। कंपनी के मैनेजमेंट टीम के सदस्यों ने अपने शब्दों से सभी का मार्गदर्शन किया। कंपनी की सफलताओं के लिए टीम का अभिनेदन किया और आगे के लिए लक्ष्य निर्धारित किया और उनको पार करने में आने वाली चुनौतियों पर भी चर्चा की गयी। कर्मचारियों द्वारा कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किए गए। व्यापक रूप से समस्त कार्यक्रम कर्मचारियों के लिए बहुत ही मनोरंजक और उत्साहवर्धक रहा।



विजयालक्ष्मी दास उध्यमिता पुरस्कार 2023

17 जुलाई 2020 को, SATYA माइक्रोकैपिटल लिमिटेड ने विजयालक्ष्मी दास उध्यमिता पुरस्कार 2020 के पहले संस्करण का उद्घाटन किया।

विजयालक्ष्मी दास उध्यमिता पुरस्कार का उद्देश्य जमीनी स्तर पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम एंटरप्राइज़ क्षेत्र की महिला उद्यमियों को सम्मानित करने के लिए एक पुरस्कार और मान्यता मंच प्रदान करना है। स्वर्गीय श्रीमति विजयालक्ष्मी दास एक उल्लेखनीय महिला थीं जिन्होंने माइक्रोफ़ाइनेंस क्षेत्र के कई व्यवसायियों को प्रेरित किया है एवं जिन्हें "मदर ऑफ़ इंडियन माइक्रोफ़ाइनेंस" भी कहा जाता है।

इन पुरस्कारों के तत्वावधान में, सत्या निम्नलिखित श्रेणियां प्रदान करता है:

I. एंटरप्रेन्योर ऑफ़ द इयर - माइक्रो एंटरप्राइज़

विवरण: यह पुरस्कार उन महिला उद्यमियों के प्रयासों को स्वीकार करता है जिन्होंने सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय शुरू किया है और कुल 4+ व्यक्तियों की टीम के साथ उसका संचालन कर रहा है।

पुरस्कार राशि

- 1) तीसरा विजेता - 25,000 रुपये
- 2) दूसरा विजेता - 50,000 रुपये
- 3) विजेता - 1,00,000 रुपये

II. एंटरप्रेन्योर ऑफ़ द इयर - लघु एंटरप्राइज़

विवरण: यह पुरस्कार उन महिला उद्यमियों के प्रयासों को स्वीकार करता है जिन्होंने सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय शुरू किया है और कुल 10+ व्यक्तियों की टीम के साथ उसका संचालन कर रहा है।

पुरस्कार राशि

- 1) तीसरा विजेता - 25,000 रुपये
- 2) दूसरा विजेता - 50,000 रुपये
- 3) विजेता - 1,00,000 रुपये

III. एंटरप्रेन्योर ऑफ़ द इयर - मध्यम एंटरप्राइज़

विवरण: यह पुरस्कार उन महिला उद्यमियों के प्रयासों को स्वीकार करता है जिन्होंने सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय शुरू किया है और कुल 20+ व्यक्तियों की टीम के साथ उसका संचालन कर रहा है।

पुरस्कार राशि

- 1) तीसरा विजेता - 25,000 रुपये
- 2) दूसरा विजेता - 50,000 रुपये
- 3) विजेता - 1,00,000 रुपये

IV. लीडर ऑफ़ द इयर

विवरण: यह पुरस्कार एक ऐसी क्षमतावान महिला उध्यमी को दिया जाना है जिसने समस्त सामाजिक बंधनों एवं बाधाओं को तोड़कर, आगे कदम बढ़ाते हुये एक सकारात्मक सामाजिक बदलाव उत्पन्न किया है।

पुरस्कार राशि: 1,51,000 रुपये

इस वर्ष भी विजयालक्ष्मी दास उध्यमिता पुरस्कार के तीसरे संस्करण में समस्त भारत से आयीं 1000 प्रतिष्ठियों में से 10 शीर्ष महिला उध्यमियों को चुना गया और उन्हें फरवरी 26, 2023 को पूलमैन होटल में सम्मानित किया गया। इस समारोह में देश की कई नामी गिरामी हस्तियों ने शिरकत की।





गर्मियों के लिए स्वास्थ्य संबंधी टिप्स

स्वास्थ्य की दृष्टि से गर्मियों का मौसम हानिकारक साबित हो सकता है। गर्मी के मौसम में गला बहुत सूखता है और प्यास बहुत अधिक लगती है। इसके अलावा धूप इतनी तेज़ होती है कि चलना मुश्किल हो जाता है। लू लगने से बहुत से लोग बीमार हो जाते हैं। तापमान के अधिक होने से बैक्टीरिया, वाइरस एवं फंगस, हवा और पानी में तेज़ी से फैलते हैं और लोगों को बीमार बनाते हैं। अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए गर्मियों में इन चीजों का सेवन करें

- 1) खूब पानी पियें। इसके अलावा नींबू, दही, छाछ, नारियल पानी, पुदीना शर्बत, आम पना, जल जीरा इत्यादि का सेवन करें। इससे शरीर में ठंडक बनी रहेगी और पानी की कमी नहीं होगी। लू, हीट स्ट्रोक से भी बचाव होता है।
- 2) हरी सब्जियों का सेवन करें। गर्मी के मौसम में लौकी, तोरई, गाजर, बैंगन, पालक, टमाटर इत्यादि सब्जियों का सेवन करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- 3) फलों के रस का सेवन करें। अनानास, संतरा, अंगूर, मौसमी, तरबूज़, अनार इत्यादि फलों का सेवन करें। इसके अलावा गाजर, चुकंदर, लौकी और दूसरी सब्जियों का जूस भी पिया जा सकता है। बेल का जूस, मैंगो शेक अथवा अन्य शेक्स का सेवन भी कर सकते हैं। गन्ने का रस स्वास्थ्य-वर्धक होता है।
- 4) सलाद का सेवन करें। खीरा, ककड़ी, गाजर, मूली, प्याज, नींबू, सोयाबीन, अंकुरित अनाज, पनीर का सेवन करना स्वास्थ्य वर्धक होता है।
- 5) गर्मियों में अगर मीठा खाने का मन हो तो पेटे का सेवन करें। इसके अलावा गुलकंद, आंवले का मुरब्बा भी अच्छा विकल्प है।
- 6) अधिक मसालों वाला या तेल वाला भोजन करने से बचें।
- 7) मांसाहार का प्रयोग ना करें।
- 8) जंक फूड का सेवन कम करें।
- 9) धूप में जाते वक़्त टोपी एवं स्टोल का प्रयोग करें।
- 10) सनस्क्रीन लोशन का इस्तेमाल करें।
- 11) अपना मनपसंद खेल खेलें जैसे फुटबाल, टेनिस, क्रिकेट इत्यादि। अगर संभव हो तो तैराकी या साइकिलिंग करें। इससे बाहर की शुद्ध हवा के साथ साथ आपका व्यायाम भी हो जाएगा।
- 12) बासी खाना ना खाएं।
- 13) चाय कॉफी का सेवन कम करें।
- 14) फ्रिज़ का पानी पीने से बचें।
- 15) बहुत देर से कटे हुये फल और सब्जियों का सेवन ना करें।
- 16) सफ़ाई का ध्यान रखें। प्रतिदिन नहा के स्वच्छ कपड़े पहनें।
- 17) सुबह शाम टहला करें।

स्वस्थ रहें, मस्त रहें!!



Time Management

To realize the value of ONE YEAR, ask a student who failed a grade.

To realize the value of ONE MONTH, ask a mother who gave birth to a premature baby.

To realize the value of ONE WEEK, ask the editor of a weekly newspaper.

To realize the value of ONE HOUR, ask the lovers who are waiting to meet.

To realize the value of ONE MINUTE, ask a person who missed the train.

To realize the value of ONE SECOND, ask a person who just avoided an accident.

It is rightly said that time is the essence of life. Managing your time effectively will maximize your productivity. Setting priorities may not be easy, but prioritizing is good for time management. You should make a list of the things you need to do, put a timeline to each activity and then prioritize them at the beginning of each day, week, or month. It also suggests having a time audit, occasionally, to help you know when you need to make the adjustment.

In our daily life, we have got only twenty-four hours in a day. Therefore, we cannot do everything in one day. This creates limitations in our everyday work. To manage work, social life and sleep, division of time is important. In a particular way, division of time is need. This will help the person to complete all his tasks and so everyone should write their task in a schedule.

Designing must be in a way that each task gets enough time. Your work should have the highest priority. The second priority should be sleep. And last but not least is your social life. Your social life includes family and friends.

To live a happy and peaceful life, socializing is important. Too much workload can make a person ill. So, give your mind a little rest. Spending time with family can help you with this.

Conclusion

A person should eliminate unnecessary activities from their daily schedule. On weekends, you should do it. Especially one should socialize on weekends. Also, include traveling time in the schedule. This ensures accuracy.

Most noteworthy, make a timetable on paper, in which you should write your daily activities. This will create discipline in your life. Moreover, you should complete the task daily. However, there will be some changes in the schedule with time.

Finally, your schedule needs to be practical. You cannot make a schedule unless you know your daily timings. Each persons' schedule is unique. So, one should prioritize their own time as per their own challenges.



Stress Management

Stress Management : A psychology professor walked around on a stage while teaching stress management principles to an auditorium filled with students.

As she raised a glass of water, everyone expected they'd be asked the typical "glass half empty or glass half full" question. Instead, with a smile on her face, the professor asked, "How heavy is this glass of water I'm holding?"

Students shouted out answers ranging from eight ounces to a couple pounds.

She replied, "From my perspective, the absolute weight of this glass doesn't matter. It all depends on how long I hold it. If I hold it for a minute or two, it's light. If I hold it for an hour straight, its weight might make my arm ache a little. If I hold it for a day straight, my arm will likely cramp up and feel completely numb and paralyzed, forcing me to drop the glass to the floor. In each case, the weight of the glass doesn't change, but the longer I hold it, the heavier it feels to me."

As the class shook their heads in agreement, she continued, "Your stresses and worries in life are very much like this glass of water. Think about them for a while and nothing happens. Think about them a bit longer and you begin to ache a little. Think about them all day long, and you will feel completely numb and paralyzed – incapable of doing anything else until you drop them."

Moral of the Story: On days when you're stressed out and feeling overwhelmed, learn to embrace the inevitable and let go. Some things cannot be controlled, and no amount of worrying could put all your burdens away. Instead of letting stress get to you, embrace it, and conquer it.

Let yesterday's worries inspire you to a productive day.

STRESS - It's a six-letter word that many of us dread. Whether it's a tense interaction with a boss or pressure from friends and family, we all face stressful situations from time to time.

For some of us, these events happen sporadically. For others, daily stress is a regular part of life.

Stress can be managed by these five basic principles:

- 1. Use guided meditation :** Guided meditation is a great way to distract yourself from the stress of day-to-day life. There are many guided meditations available on the internet that can help you find 5 minutes of centered relaxation.
- 2. Practice deep breathing :** Deep breathing is a great way to reduce the activation of your sympathetic nervous system, which controls the body's response to a perceived threat. Deep breaths taken into a count of five seconds, held for two seconds and released to a count of five seconds, can help activate your parasympathetic nervous system, which helps reduce the overall stress and anxiety you may be experiencing.





3. Maintain physical exercise and good nutrition : Physical exercise and nutrition are two important components in how you respond to stress. When your body is healthy, your mind can be healthy and vice versa. Physical exercise has proven to be a great stress reliever and also helps to improve your overall quality of life. Nutrition is important as stress can deplete certain vitamins, such as A, B complex, C and E. Maintaining proper nutrition not only helps your body feel better, but your mind as well, which allows you to better combat stress.

4. Manage social media time : Spending time on social media sites can become stressful, not only by what we might see on them, but also because the time you are spending on social media might be best spent visiting friends, being outside enjoying the weather, or reading a great book.

5. Connect with others : Humans are social beings. You need to have connections with people to feel supported. Finding a sense of community — whether at work, with a religious organization, or through shared activities, such as organized sports — is important to your well-being. Enjoying a shared activity allows you to find support and foster relationships that can be supportive in difficult times.

EGRM

प्रिय साथियों,

सत्या शुरुवात से ही अपने कर्मचारियों के लिए कुछ नया और बेहतर सोचती और करती चली आ रही है। कंपनी का यह मानना है कि किसी भी संस्था की शक्ति, उसकी ताकत उसका कर्मचारी होता है जो उसे मज़बूत बनाता है। शायद इसलिए सत्या में हमेशा से ही मानव संसाधन विभाग को मानव पूँजी कहा जाता है क्योंकि हम अपने स्टाफ़ को संसाधन नहीं, पूँजी समझते हैं।

कर्मचारियों के हित को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने कर्मचारी शिकायत निवारण तंत्र (EGRM) स्थापित किया था जिसके तहत कंपनी का कोई भी कर्मचारी बिना झिझक अपनी बात / शिकायत / सुझाव एक टोल फ्री नंबर या ईमेल के माध्यम से कंपनी के समक्ष रख सकता है।

अपनी बात कहने के लिए, आप बिना किसी झिझक या डर के इस नंबर या ईमेल का उपयोग कर सकते हैं। आपकी समस्या का कंपनी के नियमानुसार उचित समाधान किया जायेगा।

Employee Grievance Redressal Mechanism

SATYA MicroCapital Limited welcomes your suggestions / information and complaints as you are an important part of the SATYA family, we would like to provide you a great place to work.

Grievance Redressal Officer will listen your complaint and redress it within seven days

Toll-Free-Number 1800-123-000008

E-mail: egrm@satyamicrocapital.com





रेसिपी

पापड़ी और भल्ला चाट

होली का त्योहार, खान-पान का त्यौहार है और इस त्योहार में चटपटे स्वाद वाले व्यंजन का महत्व ज्यादा होता है। ऐसे व्यंजनों में चाट इत्यादि जैसे व्यंजनों को काफी पसंद किया जाता है क्योंकि यह झटपट तैयार हो जाता है।

सामग्री:

- ★ 200 ग्राम मैदा
- ★ 2 टेबल स्पून सूजी
- ★ 1 टेबल स्पून अजवाइन
- ★ 1 टी स्पून नमक
- ★ 1 टेबल स्पून तेल
- ★ 1/2 कप पानी
- ★ 1 कप उड़द दाल का पेस्ट
- ★ 1 टी स्पून नमक
- ★ 2 (उबले हुए) आलू
- ★ 1 टी स्पून नमक
- ★ 1 1/2 टी स्पून लाल मिर्च पाउडर
- ★ 1/2 टी स्पून मिक्स चना
- ★ 1/2 टी स्पून काला नमक
- ★ 1 कप दही
- ★ 1 टेबल स्पून चीनी
- ★ जीरा पाउडर
- ★ चाट मसाला
- ★ 1 टी स्पून मीठी चटनी
- ★ 1 टी स्पून खट्टी चटनी
- ★ अनार के दाने
- ★ किशमिश
- ★ सेव



पापड़ी बनाने की विधि:

एक बाउल में मैदा लें, इसमें सूजी, अजवाइन और नमक भी डालें। इन्हें अच्छे से मिला लें और थोड़ा सा तेल डालें। थोड़ा सा पानी डालकर सभी सामग्री को अच्छे से मिलाएं। अब इसका आटा तैयार कर लें और रोटी की तरह बेल लें। एक गोलाकार कटर की मदद से इस रोटी में से छोटे-छोटे टुकड़े निकालें और एक अलग प्लेट में रख लें। एक पैन में तेल डालकर गर्म करें। अब इस गर्म तेल में इन छोटी पापड़ी को गोल्डन ब्राउन और क्रिस्पी होने तक फ्राई करें।

भल्ला बनाने की विधि:

उड़द दाल का पेस्ट लें, इसमें नमक डालकर अच्छे से मिलाएं। अब इस पेस्ट से छोटी-छोटी बॉल्स बनाकर डीप फ्राई कर लें। इन्हें गोल्डन ब्राउन होने तक फ्राई करें। इन्हें निकालकर कुछ देर के लिए ठंडे पानी में भिगो दें। एक बाउल में उबले हुए आलू लें, इसमें नमक और लाल मिर्च डालें।



फीलिंग और गार्निश की विधि:

एक बाउल में उबले हुए आलू लें, इसमें नमक और लाल मिर्च डालें। इन्हें अच्छे से मैश कर लें। एक छोटा बाउल काले चने लें, उसमें काला नमक डालकर मिलाएं। एक दूसरा बाउल लें इसमें दही और थोड़ी सी चीनी डालकर मिक्स करें। अब एक प्लेट में पापड़ियों को फैलाएं और इन तैयार किए गए भल्ले रखें, ऊपर से आलू और चने का मिश्रण डालें। इस पर जीरा पाउडर और चाट मसाला छिड़के। लाल मिर्च पाउडर, दही, मीठी चटनी और खट्टी चटनी डालकर फैलाएं। अनार के दानों, किशमिश और सेव से गार्निश करें।

चटपटे हरे मटर

सामग्री:

- ★ हरे सूखे मटर - 500 ग्राम
- ★ नमक - स्वादानुसार
- ★ काली मिर्च पाउडर - 1/4 छोटी चम्मच
- ★ लाल मिर्च पाउडर - 1/4 छोटी चम्मच
- ★ अमचूर पाउडर - आधा छोटी चम्मच
- ★ धनियां पाउडर - आधा छोटी चम्मच
- ★ हींग - 1 पिंच
- ★ तेल मटर तलने के लिए



बनाने की विधि:

- ★ हरे मटर को धोइये, और 5-6 घंटे या फिर रात भर के लिये पानी में भिगो दीजिये।
- ★ मटर का सारा पानी निकालिये कुकर मे डालिये, फिर 1 कप पानी मिलाइये और उबालने के लिये गैस पर रखिये।
- ★ कुकर में जैसे ही प्रेशर बनने लगे और एक सीटी आ जाय गैस बन्द कर दीजिये ताकि मटर पूरी तरह से नरम न होकर हल्के नरम ही रहे कुकर को पानी के नीचे रख के ठंडा करे और कूकर खोल के मटर निकाल कर चलनी में रखिये, जिससे सारा पानी निकल जाये।
- ★ उबले हुये मटर को मोटे साफ कपड़े पर डाल कर 2-3 घंटे तक छाया में सूखने दे ताकि इनका अतिरिक्त पानी सूख हो जाय।
- ★ मोटे तले की कढ़ाई में तेल डाल कर गरम कीजिये, जब तेल अच्छे से गरम हो जाये तब तेल में इतने मटर डालिये कि मटर तेल में डुबे रहें और जैसे ही मटर थोड़े सिक जाये, गैस धीमी कर लीजिये, मटर को कलछुल से थोड़ी थोड़ी देर में चलाते रहिये, 4-5 मिनट में ही मटर हल्के होकर तेल के ऊपर तैरने लगेंगे।
- ★ थोड़ी देर में सारे मटर तेल के ऊपर तैर रहे होंगे, इन मटर को अभी थोडा और ब्राउन और कुरकुरे होने तक तलिये।
- ★ तले हुये मटर निकाल कर किसी चलनी में रखिये, और चलनी के नीचे एक थाली रख दीजिये जिससे अतिरिक्त तेल चलनी से छन का थाली में आ जाये।
- ★ सारे मटर इसी तरह तल कर तैयार कर लीजिये।
- ★ अब मटर में सारे मसाले मिला दे और पूरी तरह से ठंडा होने दे, ठन्डे होने के बाद मटर और भी कुरकुरे हो जाते है।
- ★ स्वादिष्ट कुरकुरे मटर मसाला तैयार है एयरटाइट डिब्बे में भर कर रख दीजिये, जब दिल करे चाय के साथ खाइए और मेहमानों को भी खिलाइए।

Life @ Satya





SATYA MicroCapital Ltd.

सर्वे भवन्तु सुखिनः



CONTACT US

Address :

519, 5th Floor, DLF Prime Towers,
Okhla Industrial Area , Phase-1,
Delhi- 110020, INDIA

Mail:

info@satyamicrocapital.com

Web :

www.satyamicrocapital.com

Phone :

(+91-11) 49724000

Toll Free Number :

1800-102-5644